भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

नव प्रभा

बीईएल कार्पोरेट कार्यालय
की गृह पत्रिका

युद्ध और शांति विशेषांक

अक्टूबर 2021 – मार्च 2022
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका, अंक – 12

दृष्टि, ध्येय, मूल्य और उद्देश्य

दृष्टि

पेशेवर इलेक्ट्रॉनिकी में विश्व–स्तरीय उद्यम बनना ।

ध्येय

रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी और पेशेवर इलेक्ट्रॉनिकी के अन्य चुने हुए क्षेत्रों में गुणता, प्रौद्योगिकी और नवीनता के जरिए ग्राहक–केन्द्रित, वैश्विक प्रतिस्पर्धी कंपनी बनना ।

मूल्य

- ग्राहक को सर्वोपरि रखना।
- पारदर्शिता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से कार्य करना ।
- व्यक्तियों पर विश्वास करना और उनका सम्मान करना ।
- टीम भावना को पोषित करना ।
- अत्यधिक कर्मचारी– संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास करना ।
- लोचता और नवीनता को प्रोत्साहित करना ।
- अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करने का प्रयत्न करना ।
- संगठन का हिस्सा होने पर गर्व होना ।

उद्देश्य

- गुणता, सुपुर्दगी और सेवा की मांगों को पूरा करते हुए अत्याधुनिक उत्पादों व समाधानों को प्रतिस्पर्धी कीमतों में प्रदान करते हुए ग्राहक–केन्द्रित कंपनी बनना ।
- लाभप्रद विकास हेतु आंतरिक संसाधनों को सृजित करना ।
- संस्थागत अनुसंधान व विकास, रक्षा / अनुसंधान प्रयोगशालाओं तथा शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझेदारी के जरिए रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी में प्रौद्योगिकीय नेतृत्व हासिल करना ।
- निर्यात पर जोर देना ।
- लोगों के लिए सतत् शिक्षण व टीम–कार्य के जरिए उनकी पूरी क्षमता को प्राप्त कराने हेतु सुविधापूर्ण परिवेश सृजित करना ।
- ग्राहकों को उनके धन का पूरा प्रतिफल प्रदान करना और शेयरधारकों हेतु संपदा सृजित करना ।
- कंपनी के निष्पादन को अंतर्राष्ट्रीय रूप से सर्वोत्कृष्ट श्रेणी के साथ सतत् रूप से निर्देश–चिह्नित करना ।
- विपणन क्षमताओं को वैश्विक मानकों तक बढ़ाना ।
- स्वदेशीकरण के माध्यम से आत्म–निर्भरता का प्रयत्न करना ।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

लेख का नाम

क्रम. सं.	विषय–सूची	पृष्ठ सं.
01	राजभाषा गतिविधियाँ	01
02	वार्षिक कार्यक्रम	12
03	सीएमडी राजभाषा शील्ड	13
04	अशोक का युद्ध मोह भंग– सत्यजीत स्वाई	14
05	डिजिटल दुनिया– मोनिका कटारिया	15
06	भारत–विश्व का शांति दूत– दीपिका रेवणकर मंजुनाथ	16
07	युद्ध बनाम शांति– देवराज	18
08	मेक इन इंडिया अभियान – मनोज कुमार नागवंशी	20
09	राजभाषा के 12प्र	23
10	शांतिदूत सम्राट अशोक– राजन शर्मा	24
11	युद्ध– विनोद कुमार	26
12	युद्ध और शांति– डॉ उषा श्रीवास्तव	27
13	राजभाषा–विविध आयाम–भूपेंद्र प्रताप सिंह	29
14	रूस–यूक्रेन युद्ध – भारतीय अर्थव्यवस्था– ऋतु लांबा	31
15	युद्ध से क्या हासिल?– कविता पटेल	33
16	युद्ध है तो शांति नहीं– लेखांजिनी मनीष	34
17	वीरगति (कहानी)– नीरज कुमार चड्ढा	35
18	वर्ग पहेली	37
19	अंकुर (प्रतिभाशाली बच्चे)	39
20	डीप फ्रीजर– शिव कुमार	41
21	पथ – मोनिका जंगपांगी	41
22	हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें	42
23	साहित्यकार परिचय – इस बार कृष्णा सोबती	44

राजभाषा दृष्टि
RAJBHASHA VISION

संस्थान के कार्यकलाप के हर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी को सरल रूप में अपनाना।

To adopt Official Language Hindi in every sphere of activity of the Company in its simple form

राजभाषा ध्येय
RAJBHASHA MISSION

प्रतिबद्धता, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिंदी में मूल कार्य करने की संस्कृति को आत्मसात करना और राजभाषा हिंदी को मौखिक, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में अपनाना।

To imbibe a culture of doing original work in Hindi through Commitment, Motivation and Incentive and to adopt Rajbhasha Hindi as the spoken, written and electronic medium of communication.

आनंदी रामलिंगम
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि 'नवप्रभा' का बारहवां अंक प्रकाशित किया जा रहा है जो सम–सामयिक विषय **युद्ध और शांति** पर आधारित है। इस पत्रिका के माध्यम से हमें राजभाषा की दिशा में अपने प्रयासों और शुरू की गई नई पहल को आप तक पहुंचाने का अवसर मिलता है।

इस अंक में कार्पोरेट कार्यालय के साथ–साथ, यूनिटों और कार्यालयों में आयोजित किए गए राजभाषा कार्यक्रमों की जानकारियां दी गई हैं। कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा सही रहे, यह सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2022–23 के लक्ष्यों को प्रमुखता से शामिल किया गया है। राजभाषा लक्ष्य और ध्यान देने वाली बातों को भी शामिल किया गया है। मुझे पूरी आशा है कि ऐसी सामग्री से हमारे कर्मचारी लाभान्वित होंगे। राजभाषा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। भारत सरकार द्वारा तकनीक और प्रौद्योगिकी की सहायता से हिंदी में आसानी से कार्य करने की सुविधा लगातार प्रोन्नत की जा रही है।

रक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने वाली कंपनी होने के नाते बीईएल राजभाषा के क्षेत्र में भी इनका प्रयोग कर रही है। बीईएल के कर्मचारियों की कर्तव्य–निष्ठा और लगन के कारण कई यूनिटों और कार्यालयों को राजभाषा के क्षेत्र में सम्मानित किया गया है जो हम सबके लिए गौरव का विषय है। आशा करती हूँ कि लगातार मेहनत से हम भविष्य में भी नई ऊंचाईयां प्राप्त करेंगे।

पत्रिका से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को मेरी शुभकामनाएं।

जयहिंद...

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति

आनंदी रामलिंगम
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

विक्रमन एन
महाप्रबंधक (एच.आर.)
सदस्य

रामन आर
महाप्रबंधक (आं.ले.प.)
सदस्य

दामोदर भट्टड
महाप्रबंधक (वित्त)
सदस्य

हरिकुमार आर
महाप्रबंधक (टी. पी.)
सदस्य

हेमावती मुतुसामी
प्रभारी महाप्रबंधक (एस.पी.)
सदस्य

मंजुनाथ डी हेगड़े
अ.म.प्र. (सतर्कता)
सदस्य

आनंद एस
अ.म.प्र. (एच.आर.)
सहयो. सदस्य

मनोज यादव
अ.म.प्र. (एम.एस.)
सदस्य

कृष्णप्पा टी आर
व.उ.म.प्र. (सी.सी)
सदस्य

श्रीनिवास एस एस आर
व.उ.म.प्र. (लाईसेंसिंग)
सदस्य

श्रीनिवास एस
कंपनी सचिव
सदस्य

श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)
सदस्य सचिव

विक्रमन एन
महाप्रबंधक (एच.आर.)

संदेश

हिंदी जनमानस की अभिव्यक्ति, उनके प्रेम और सौहार्द की भाषा है। इसके अनेक रंग हैं, जब यह केन्द्र सरकार की कामकाजी भाषा या राजभाषा के रूप में प्रयुक्त होती है तो स्पष्ट, शिष्ट और संस्कृतनिष्ठ रूप में दिखती है, जब साहित्य में ढलती है तो छंद, रस और अलंकारों से युक्त प्रखर और शब्दों की धनी भाषा बन जाती है। जब उत्तर से दक्षिण भारत तक वहां के लोगों द्वारा बोली जाती है तो उस क्षेत्र की स्थानीयता और सभ्यता–संस्कृति के रंग में घुल–मिल कर विशेष अंदाज में बोली जाती है और एकता के प्रतीक के रूप में पूरे भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स की गृह–पत्रिका 'नवप्रभा' भी इसी रूप में विशेष है, क्योंकि भारत भर में स्थित इसकी यूनिटों और कार्यालयों के कर्मचारी अपनी कल्पना और सोच को उनके रचित लेखों के माध्यम से हम तक पहुंचाते हैं। भिन्न–भिन्न विषयों पर लिखी ये रचनाएं नवप्रभा में गुलदस्ते का रूप ले लेती हैं।

नवप्रभा का यह बारहवां अंक **युद्ध और शांति** विषय पर आधारित है जो सम्यक भी है। इस अंक के प्रकाशन पर मैं सभी को शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूँ कि आगे भी यह पत्रिका इसी प्रकार ज्ञानवर्धन का माध्यम बनेगी और बेहतर बनने की दिशा में प्रयासरत रहेगी।

जय हिंद...

बीईएल के राजभाषा अधिकारीगण

श्रीनिवास राव
कार्पोरेट कार्यालय

एच एल गोपालकृष्णा
बेंगलुरु कॉम्प्लेक्स

वी. सुरेश कुमार
हैदराबाद

बिमल मोहन सिंह रावत
नवी मुंबई, पुणे

श्यामलाल दास
चेन्नै

रजनी साव
सी.आर.एल., बेंगलुरु

भूपेन्द्र सिंह
पंचकूला

नवजोत पीटर
गाजियाबाद

माधुरी रावत
कोटद्वार

दिनेश उईके
मछिलिपट्नम

आनंद एस
अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संदेश

अल्बर्ट आइंस्टीन के इस कथन कि 'मुझे नहीं पता कि तीसरा विश्व युद्ध किन हथियारों से लड़ा जाएगा, लेकिन चौथा विश्व युद्ध लाठी और पत्थरों से लड़ा जाएगा' पर आज हमें दोबारा सोच–विचार करने की जरूरत है। इसी विषय पर मंथन करने के लिए नवप्रभा का यह बारहवां अंक **युद्ध और शांति** विषय को समर्पित किया गया है।

पत्रिका का हर अंक नए विषय पर प्रकाशित करना विशेषता होने के साथ–साथ अपने आप में चुनौती भरा काम भी होता है। मुझे खुशी है कि हमारी कार्पोरेट राजभाषा टीम के समन्वयन से यूनिटों और कार्यालयों के अधिकारी और कर्मचारी जिनमें से ज्यादातर तकनीकी क्षेत्र के हैं, अपना सहयोग हमें स्वेच्छा से देते आ रहे हैं। खास बात यह है कि इस अंक में कर्मचारियों के बच्चों ने भी खुशी–खुशी अपनी कला का जौहर दिखाया है। मैं शेष साथियों से भी आग्रह करना चाहूंगा कि वे जितना हो सके, अपने विचारों को हिंदी में व्यक्त करें, हिंदी में लिखें और राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना जारी रखें।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में शामिल विषय–विशिष्ट लेख, कविताएं, राजभाषा गतिविधियां और साहित्यकार परिचय, वर्ग पहेली, हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें, कार्टून जैसे स्थायी स्तंभों से राजभाषा के प्रति पाठकों की रूचि बढ़ेगी और कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा।

पत्रिका के सफल और अनवरत प्रकाशन तथा उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ...

जय हिंद...

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड,
कार्पोरेट कार्यालय

नव प्रभा अंक–12
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका

(केवल निजी वितरण के लिए)

मार्गदर्शन
श्रीमती आनंदी रामलिंगम
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री विक्रमन एन.
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

परामर्शदाता
श्री आनंद एस
अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक
श्री श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. रहिला राज के.एम.
कनिष्ठ अनुवादक

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं, बीईएल से इसकी सहमति अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

कभी कड़ाके की ठंड में ठिठुर के देखना
कभी तपती धूप में चल के देखना
कैसे होती है हिफाजत अपने देश की
जरा सरहद पर जाकर देखना।।

महाभारत के समय युद्ध करने वालों के लिए आचार–संहिता थी। सूर्यास्त के बाद युद्ध नहीं होगा, युद्ध केवल युद्ध–भूमि में होगा, शारीरिक क्षति केवल सैनिकों की होगी, सामान्य नागरिक उसकी आँच से अछूते रहेंगे आदि। आज इस प्रकार की कोई आचार–संहिता नहीं है। रात के समय विनाशकारी बमों से लदे वायुयान शहरों, बस्तियों, रिहायशी इलाकों पर बम–वर्षा करते हैं और नागरिकों का मनोबल तोड़ते हैं ताकि जनता का मनोबल टूटने पर शत्रु देश की सरकारें या तो संधि करने पर विवश हों या हथियार डालकर आत्म–समर्पण कर दें। आज युद्ध से जन–धन की अपार क्षति होती है, स्त्रियाँ विधवा, बच्चे अनाथ, बूढ़े बेसहारा हो जाते हैं। युद्ध के समय लाखों व्यक्ति मारे जाते हैं, लाखों विकलांग हो जाते हैं, वातावरण इतना प्रदूषित हो जाता है कि जो जीवित बचते हैं, वे भी अनेकों रोगों का शिकार होकर नारकीय जीवन बिताते हैं और कहते हैं कि इस जिंदगी से तो मौत बेहतर है।

आप जानते हैं कि नवप्रभा का हर अंक विषय–विशिष्ट होता है। युद्ध की इसी विभीषिका पर बात करने, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना प्रसारित करने के लिए हमने यह अंक **युद्ध और शांति** पर रखा है। आशा है सुधी पाठकों को संबंधित लेख, रचनाएं और कविताएं सोचने पर मजबूर करेंगी और हम विश्व शांति की पैरवी करेंगे और इस ओर व्यक्तिगत और समावेशी प्रयास करेंगे।

पाठकों को उपयोगी और रोचक जानकारी देने के साथ–साथ चिंतन–मनन करने के मुद्दे भी उपलब्ध कराना नवप्रभा का एक उद्देश्य है। तो इस बारे में सोचें, विचारें और अपने सुझावों से हमें अवगत कराएँ। पत्रिका में योगदान देने वाले सभी साथियों से आशा करता हूँ कि आप इसी तरह अपनी लेखनी और ज्ञान से पत्रिका को सजाते रहेंगे।

हमारा विनम्र प्रयास आपको कैसा लगा, जरूर बताइएगा।

राजभाषा गतिविधियाँ

कार्पोरेट कार्यालय

संसदीय समिति की समीक्षा बैठक

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति ने दिनांक 10.11.2021 को पंचकूला यूनिट का निरीक्षण किया और राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा की।

रक्षा मंत्रालय की समीक्षा बैठक

रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा दिनांक 28.10.2021 को चेन्नै यूनिट के राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा की।

कार्पोरेट राजभाषाई निरीक्षण

कोविड–19 के कारण इस वर्ष ऑनलाइन माध्यम से 05 यूनिटों का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। बैठक में यूनिट प्रमुख, यूनिट राभाकास के सदस्यों, यूनिटों के राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया।

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक शब्दावली का निर्माण

बीईएल रक्षा इलेक्ट्रॉनिक शब्दावली तैयार करने के लिए बीईएल और सीएसटीटी, शिक्षा मंत्रालय के विषय विशेषज्ञों की 3री बैठक जनवरी, 2022 में संपन्न हुई। अब तक कुल 2410 शब्दों का मानकीकरण किया गया।

कृष्णा सोबती व्याख्यानमाला

कृष्णा सोबती व्याख्यानमाला के तहत 23 सितंबर, 2021 को "कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के अनुप्रयोग" विषय पर हिंदी में तकनीकी व्याख्यान का आयोजन किया गया।

दिनांक 03.12.2021 को कार्पोरेट ऑडिटोरियम में 'सामान्य स्वास्थ्य और खुशहाली' विषय पर हिंदी में तकनीकी व्याख्यान का आयोजन किया गया।

भारतेंदु राजभाषा कौशल विकास कार्यक्रम 1

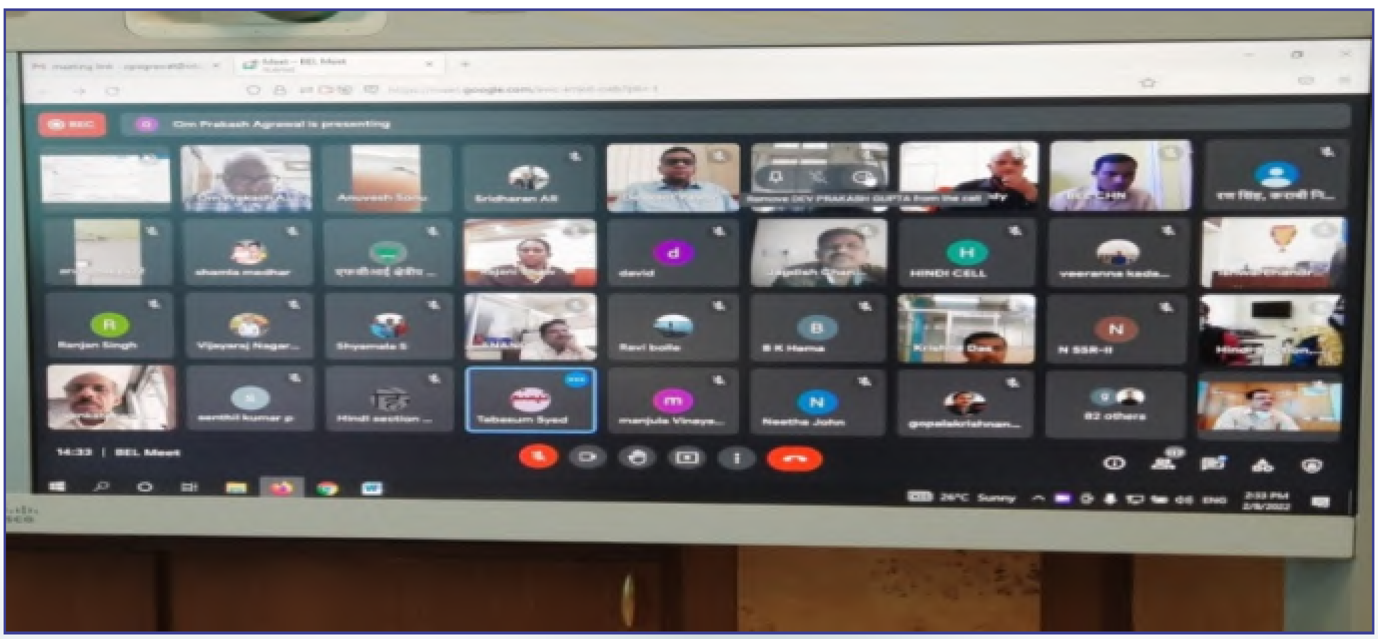

दिनांक 08.02.2022 को नराकास के तत्वावधान में बीईएल कार्पोरेट कार्यालय ने बेंगलूरु स्थित केंद्र सरकार / बैंक / उपक्रमों के राजभाषा सेवियों के लिए अभिनव प्रयास करते हुए "भारतेंदु राजभाषा कौशल विकास कार्यक्रम" के अंतर्गत 'माइक्रो सॉफ्ट से परिचय–नए परिप्रेक्ष्य में' विषय पर श्री ओ पी अगरवाल, आई.टी. विशेषज्ञ, आरबीआई (से.नि.) द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया। इसमें लगभग 160 राजभाषा कार्मिकों ने भाग लिया।

बेंगलूरु कॉम्प्लेक्स

ज्ञानवाणी प्रतियोगिता

29 अक्टूबर 2021 को गुणज्योति हॉल में विशिष्ट विषयों पर हिंदी में प्रस्तुति – ज्ञान वाणी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के अतिथि एवं निर्णायकगण के रूप में श्री एम पी दामोदरन, प्रभारी सहायक निदेशक, हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, बेंगलूरु एवं बीईएल कॉलेज की प्रवक्ता श्रीमती वेंकटा हिमा जी थीं। प्रतियोगिता में 13 टीमों ने भाग लिया एवं प्रत्येक प्रतिभागी को प्रोत्साहन स्वरूप स्मृति–चिह्न वितरित किया गया। श्री एम पी दामोदरन ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दी तथा सभी प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाने के लिए मंत्र दिया कि "जब आप किसी को सिखाते है तब आप सोचिए कि आप उक्त विषय में पूर्ण ज्ञाता है लेकिन जब आप किसी से कुछ सीखते है तो स्वयं को अनभिज्ञ समझकर उस ज्ञान को ग्रहण करें।" डॉ. गोपालकृष्ण एच.एल.,उप प्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतियोगिता का सफल संचालन किया।

विश्व हिंदी दिवस समारोह

दिनांक 03 फरवरी 2022 को ज्ञानार्जन और विकास केंद्र (सीएलडी) में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री आर पी मोहन, महाप्रबंधक (मा.सं.) ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अनिल पंत, महाप्रबंधक(अं.वि.प्र.), महाप्रबंधक (मा.सं.), अ.महा प्रबंधक(मा.सं.), व.उप महाप्रबंधक (मा.सं.) उपस्थित थे।

बीईएल, चेन्नै

दिनांक 29.10.2021 को रक्षा मंत्रालय द्वारा चेन्नै यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण

दिनांक 29.10.2021 को रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा बीईएल, चेन्नै का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान यूनिट प्रमुख श्री. जी.एल. पेड्रो, सभी विभागीय प्रमुख, मुख्यालय के अधिकारीगण एवं यूनिट के राजभाषा कर्मी उपस्थित थे। निरीक्षण के दौरान राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली पर विस्तृत चर्चा की गई। र.मं. के अधिकारियों ने चेन्नै यूनिट के राजभाषा कार्यान्वयन पर संतुष्टि व्यक्त की।

हिंदी भाषा प्रशिक्षण

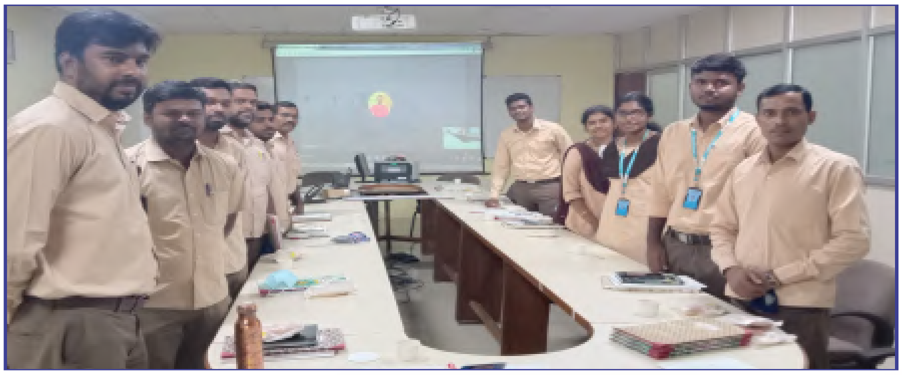

कर्मचारियों को प्रति वर्ष बैचवार हिंदी प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। वर्ष 2021 के दौरान, फैक्ट्री परिसर में सत्र (जुलाई–नवंबर, 2021) के लिए ऑनलाइन हिंदी कक्षाएं (प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ) आयोजित की गईं जिसमें कुल 29 अधिकारियों / कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

हिंदी कार्यशाला

प्रत्येक तिमाही हिंदी कार्यशाला (स्वयं अभ्यास के साथ) का आयोजन किया जा रहा है । अक्टूबर – मार्च 2022 के दौरान 2 ऑनलाइन हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं और इस कार्यशाला में कुल 18 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। कार्यशाला बाह्य प्रशिक्षक द्वारा आयोजित की गई और इसमें कार्मिकों को हिंदी पुस्तकें भी वितरित की गईं।

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, बेंगलूरु

दिनांक 11.03.2022 को सीआरएल में वार्षिक कार्यक्रम पर चर्चा एवं हिंदी कार्य व्यवहार विषय पर संकाय सदस्य के रूप में डॉ. शंकर प्रसाद, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) एच ए एल (से नि) द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में सीआरएल के ई–IV श्रेणी के कार्यपालक शामिल हुए।

विश्व हिंदी दिवस–2022 का आयोजन

प्रशासनिक कार्यों के साथ–साथ तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से, विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर दिनांक 18–19 जनवरी, 2022 को सीआरएल के कार्यपालकों के लिए तकनीकी लेख प्रस्तुतीकरण का आयोजन किया गया। कोविड परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सामाजिक दूरी के अनुपालन के साथ इस प्रस्तुतीकरण में कुल 8 टीमों ने हिस्सा लिया। अधिकारी (राजभाषा) ने निर्णायक मंडल में शामिल कुल 4 निर्णायकों श्री देबाशीष दास, अपर महाप्रबंधक (सुपर कांपो), श्रीमती रेखा शास्त्री, अपर महाप्रबंधक (क्रिप्टो सोल्युशंस), श्रीमती संगीता श्रीवास्तव, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (एम्बेडेड प्रणाली), श्री वीरेंद्र कुमार मित्तल, सदस्य वरिष्ठ अनुसंधान स्टाफ (एआई) का स्वागत किया।

`निर्देशित ऊर्जा आयुध प्रणाली`,`पीसीबी के लिए टैंपर रेस्पोंडेंट यूनिट`,`उच्च शक्ति बहु–कार्य चिपसेट का स्वदेशीकरण`,`ड्रोन– विज्ञान का विस्मयकारी आविष्कार रक्षा अनुप्रयोगों के लिए उभरती प्रौद्योगिकियां सौर ऊर्जा उपग्रह के माध्यम से वायरलेस पावर ट्रांसमिशन कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीन लर्निंग और उसके अनुप्रयोग जैसे कुल 8 तकनीकी विषयों पर टीमों ने प्रस्तुति दी और निर्णायकों के प्रश्नों का उत्तर दिए ।

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, गाज़ियाबाद

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला गाज़ियाबाद, द्वारा कार्मिकों के बच्चों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रशस्ति पत्र व 1000/– रुपए का पुरस्कार प्रदान किया गया। मुख्य वैज्ञानिक, श्री अनूप कुमार रॉय के साथ कार्मिक तथा उनके बच्चे

नराकास बैठक का आयोजन सीआरएल, गाज़ियाबाद द्वारा किया गया, जिसमें नराकास उपक्रम के सदस्य कार्यालयों के प्रमुख, उच्चाधिकारी, मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार रॉय, राजभाषा अधिकारी एवं अन्य अतिथियों ने भाग लिया।

नराकास की बैठक में मुख्य वैज्ञानिक, श्री अनूप कुमार रॉय के साथ श्रीमती रेखा अग्गरवाल (प्रबंधक– मा.सं. एवं प्रशा) शील्ड लेते हुए।

सीआरएल, गाजियाबाद में हिंदी विश्व दिवस के अवसर पर 10 जनवरी को महत्वपूर्ण स्थानों पर स्टैंडिस व बैनर आदि लगाए गए। सुश्री गार्गी ने 'राजभाषा का महत्व' विषय पर व्याख्यान दिया।

बीईएल गाज़ियाबाद

दिनांक 18/10/2021 को पारंगत पाठ्यक्रम प्रशिक्षण की सत्रांत परीक्षा में भाग लेते कार्मिक। इस प्रशिक्षण हेतु 10 कार्मिकों को नामित किया था जिन्होंने सफलतापूर्वक यह प्रशिक्षण उतीर्ण किया।

दिनांक 22.12.2021 को नराकास उपक्रम गाजियाबाद की छमाही बैठक में बीईएल गाजियाबाद को 2019–20 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्य हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। सहायक निदेशक (कार्या.) गृह मंत्रालय, श्री नरेंद्र मेहरा से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए कार्यपालक निदेशक (एनसीएस) एवं इकाई प्रमुख श्री जयदीप मजुमदार व मा.सं. एवं प्रशासन प्रमुख श्री दिब्येन्दु बिद्यान्त के साथ बीईएल गाजियाबाद इकाई की राजभाषा टीम।

वर्ष 2020–21 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्य–निष्पादन हेतु गरिमा पुरस्कार व नराकास पुरस्कार के साथ बीईएल गाजियाबाद की राजभाषा कार्यान्वयन समिति व राजभाषा टीम

बीईएल हैदराबाद

- दि. 25.10.2021 को भारत डायनामिक्स लिमिटेड में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 54वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें यूनिट प्रमुख श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक एवं राजभाषा कर्मी उपस्थित हुए।
- यूनिट में प्रथम बैच के लिए सत्र जुलाई–नवंबर 2021 के दौरान पारंगत प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन किया गया जिसके लिए 20 कर्मचारियों को नामित किया गया और 18.11.2021 को 19 कर्मचारी परीक्षा में उपस्थित हुए। परीक्षा में शत प्रतिशत कर्मी उत्तीर्ण हुए और उन्हें एकमुश्त पुरस्कार राशि भी प्रदान की गई।
- दि.04.12.2021 को हैदराबाद में संपन्न दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में बीईएल हैदराबाद की ओर से राजभाषा अधिकारी श्री वी सुरेश कुमार, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सुश्री के दिव्या, अधिकारी (राजभाषा) ने भाग लिया।
- वित्तीय वर्ष 2021–22 के दूसरे अर्ध वर्ष के लिए दि.25.10.2021 को तीसरी तिमाही एवं 05.02.2022 को चौथी तिमाही की हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं का आयोजन ऑफलाईन, स्व–अध्ययन विधि में किया गया जिसमें कार्यशाला की अध्ययन सामग्री प्रस्तुतीकरण के रूप में तैयार कर नामित सभी कर्मचारियों को आंतरिक ईमेल (ज़िंब्रा) द्वारा अग्रेषित किया गया। राजभाषा नीति, कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के सरल रूप को अपनाने, टिप्पण एवं मसौदा लेखन, और कंप्यूटर पर यूनिकोड आधारित हिंदी शब्द संसाधन विषयों पर यह कार्यशालाएं केंद्रित थी और इनमें लगभग 78 कर्मचारी उपस्थित हुए।
- कार्पोरेट द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार कार्पोरेट में दि. 28.12.2021 और दि.30.03.2022 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में ऑनलाइन द्वारा यूनिट की ओर से राजभाषा कर्मी उपस्थित हुए।
- 10 जनवरी 2022 को यूनिट में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत 'भारत की आवाज़ हिंदी' नामक एक लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया जिसके पश्चात एक योग सत्र का भी आयोजन किया गया जिसके संचालन के लिए सुश्री प्रियंका कुंभरगेरी, योग प्रशिक्षक को आमंत्रित किया गया।
- दि.08.02.2022 को बेंगलूरु नराकास के लिए आयोजित 'भारतेंदु राजभाषा कौशल अभिमुखीकरण कार्यक्रम' में यूनिट राजभाषा कर्मी ऑनलाइन द्वारा उपस्थित हुए।
- दिनांक 22.03.2022 को कार्पोरेट द्वारा श्री राजाकुमार एजी, प्रभारी महाप्रबंधक (गु)/सीओ, श्री श्रीनिवास राव, सहायक प्रबंधक (रा.भा.)/सीओ ने ऑनलाइन माध्यम से यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण किया। इस निरीक्षण में यूनिट की ओर से श्री निखिल कुमार जैन, प्रभारी महाप्रबंधक (ईडबल्यूएलएस), सभी प्रभाग प्रधान एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित हुए।

बीईएल पुणे

राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन

पुणे यूनिट में कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए विगत छरू माह में राजभाषा तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरना एवं हिदी कार्य अभ्यास और राजभाषा नीति परिचय और संवैधानिक प्रावधान व अभ्यास विषयों पर दो कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में शिक्षुओं/संविदा लिपिकों को भी शामिल किया गया। कार्यशालाओं में अभ्यास के दौरान राजभाषा ज्ञान एवं नीति पर अंत में लघु परीक्षा भी आयोजित की गई। कंप्यूटर पर अनुवाद तथा यूनिकोड टाइपिंग की सहायता से हिंदी कार्य करने का प्रशिक्षण भी दिया गया। उपर्युक्त कार्यशालाएं राजभाषा अधिकारी द्वारा संचालित की गई।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

दिनांक 31.12.2021 और दिनांक 25.03.2022 को यूनिट में राजभाषा कार्यन्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई । बैठक में सभी सदस्यों ने भाग लिया। बैठक का कार्यवृत्त द्विभाषी तैयार कर जारी किया गया।

नराकास, पुणे के सदस्य कार्यालय द्वारा आयोजित हिंदी परिचर्चा प्रातियोगिता में कर्मचारी पुरस्कृत

सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे द्वारा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 10 जनवरी, 2022 को एक हिंदी परिचर्चा प्रतियोगिता ऑन लाइन आयोजित की गई थी। इसमें यूनिट की ओर से श्री हेमंत माताडे, कनिष्ठ अनुभाग अधिकारी ने ऑन लाइन भाग लिया और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

"महिला अधिकार व कानून" विषय पर हिंदी में व्याख्यान

महिला दिवस के अवसर पर दिनांक 08.03.2022 को मॉडर्न लॉ कॉलेज की प्रधानाचार्य श्रीमती अनन्या बिडवे द्वारा "महिला अधिकार व कानून" विषय पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान में यूनिट के भीतर सभी क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं ने भाग लिया।

"प्राथमिक उपचार" पर हिन्दी में व्याख्यान

संरक्षा सप्ताह समारोह, 2022 के दौरान दिनांक 10.03.2022 को यूनिट में कर्मचारियों के लिए डॉ. जयवंत श्रीखंडे, महाप्रबंधक, आकस्मिक चिकित्सा सेवाएं, लोकमान्य अस्पताल, पुणे द्वारा "प्राथमिक उपचार" पर हिन्दी में व्याख्यान एवं लघु कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में लगभग 60 कर्मचारियों, अधिकारियों, अप्रेंटिसेस एवं संविदा लिपिकों ने भाग लिया।

बीईएल पंचकूला

10 नवंबर 2021 को संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा यूनिट का निरीक्षण किया गया। समिति ने निरीक्षण के दौरान भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा आगे भी निरंतरता बनाए रखने की अपेक्षा प्रकट की।

दिनांक 28 फरवरी 2022 को भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, पंचकूला द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पंचकूला के तत्वावधान में हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में नराकास पंचकूला के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर एकक के कार्यकारी महाप्रबंधक श्री सलिल डे सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी तथा राजभाषा के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने की अपील की। प्रतियोगिता का संचालन नराकास पंचकूला की सचिव श्रीमती संगीता वशिष्ठ, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया। श्रीमती संगीता वशिष्ठ ने राजभाषा के क्षेत्र में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, पंचकूला द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि बीते वर्ष नराकास पंचकूला द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में सबसे अधिक पुरस्कार भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड पंचकूला ने जीते हैं इसके लिए एकक बधाई की पात्र है।

बीईएल नवी मुंबई

राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन

नमु यूनिट में कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए विगत छरू माह में राजभाषा तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरना एवं हिंदी कार्य का अभ्यास और राजभाषा नीति परिचय और संवैधानिक प्रावधान विषयों पर दो कार्यशालाएं निम्नवत आयोजित की गईं जिनमें क्रमशः 17 और 32 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशालाओं में अभ्यास के दौरान राजभाषा ज्ञान एवं नीति पर अंत में लघु परीक्षा भी आयोजित की गई। कंप्यूटर अनुवाद तथा यूनिकोड टाइपिंग की सहायता से हिंदी कार्य करने का प्रशिक्षण भी दिया गया। उपर्युक्त कार्यशालाएं राजभाषा अधिकारी द्वारा संचालित की गई।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

दिनांक 30.12.2021 और दिनांक 29.03.2022 को यूनिट में राजभाषा कार्यन्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई। बैठक में 20 सदस्यों ने भाग लिया। बैठक का कार्यवृत्त द्विभाषी तैयार कर जारी किया गया।

दर्द और शरीर का दर्द दूर कर इम्यूनिटी बढ़ाता है हल्दी वाला दूध

हल्दी को दूध में उबालकर पीना एक बेहतरीन कॉम्बिनेशन है क्योंकि दूध प्रोटीन का बेस्ट सोर्स है जो घाव को भरने में मदद करता है और हल्दी में ऐंटी–इन्फ्लेमेट्री प्रॉपर्टीज होती हैं जो मसल्स में सूजन और जलन में राहत दिलाती हैं। हल्दी में कर्क्यूमिन भी होता है जो की एक स्ट्रॉन्ग ऐंटिऑक्सिडेंट है जो इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में मदद करता है।

सावधानी बरतें– हल्दी वाले दूध को आप इलाज का सब्सिट्यूट नहीं मान सकते। अगर कोई ऐसी चोट या समस्या है जिसमें इलाज कराने और दवा खाने की जरूरत है तो उससे परहेज ना करें। आप दवा के साथ हल्दी वाला दूध पीना जारी रख सकते हैं।

भारत सरकार — गृह मंत्रालय

Government of India — Ministry of Home Affairs

वार्षिक कार्यक्रम 2022-23 ANNUAL PROGRAMME 2022-23

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्य)Targets for the Implementation of Official language Policy)

1. हिन्दी में मूल पत्राचार) ईमेल- सहित(Originating Correspondence in Hindi (including E-mails)					
क क्षेत्र		ख क्षेत्र		ग क्षेत्र	
क क्षेत्र से क क्षेत्र को From A region to A region	100%	ख क्षेत्र से क क्षेत्र को From B region to A region	90%	ग क्षेत्र से क क्षेत्र को From C region to A region	55%
क क्षेत्र से ख क्षेत्र को From A region to B region	100%	ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को From B region to B region	90%	ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को From C region to B region	55%
क क्षेत्र से ग क्षेत्र को From A region to C region	65%	ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को From B region to C region	55%	ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को From C region to C region	55%
क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ / व्यक्ति / राज्य क्षेत्र के कार्यालय From Region A to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	100%	ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य / / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय व्यक्तिFrom Region B to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	90%	ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ राज्य / व्यक्ति / क्षेत्र के कार्यालय From Region C to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	55%

	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में देना / Letters received in Hindi to be answered in Hindi	100%	100%	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण / Noting in Hindi	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training programme through Hindi Medium)	70%	60%	30%
5.	हिन्दी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती / Recruitment of Hindi Typists, Stenographers	80%	70%	40%
6.	हिन्दी में डिक्टेशन स्वयं) की बोर्ड पर सीधे टंकण /अथवा सहायक द्वारा / (Dictation in Hindi / Direct typing on key-board (Self or by Asstt.)	65%	55%	30%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण भाषा), टंकण, आशुलिपि / (Hindi Training ((Language, Typing, Stenography)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना /Preparing of Bilingual training Material	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर, पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ईपुस्तक-, सीडीडीवीडी/,पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय / Expenditure for the purchase of Hindi books, including digital itmes i.e.Hindi e-books,CD/DVD,Pen drive & the amount incurred on Hindi translation from English & regional languages, excluding journals and standard reference books.	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद /Purchase of all electronic equipments including computers in bilingual form	100%	100%	100%
11.	वेबसाईट द्विभाषी हो/ Website bilingual	100% (द्विभाषी(		
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो / Citizen charter and display of Public Interface Information Board bilingual	100% (द्विभाषी(		
13.	(1) मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण / (% कार्यालयों का) Inspection of Offices located outside Headquarters (% of Offices)	25% (न्यूनतम(		
	(2) मुख्यालय / कार्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण/Inspection of sections at Hqrs./office	25% (न्यूनतम(		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें /Meetings regarding Official Language - राजभाषा कार्यान्वयन समिति/ Official Language Implementation Committee	वर्ष में 04 बैठकें / 4 Meetings in a Year (प्रति तिमाही एक बैठक/( )1 Meeting every qtr)		
15.	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद / Translation of Codes, Manuals, Forms, Procedural Literature	100%		
16.	कार्यालय के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिन्दी में हो Sections of the Offices where entire work to be done in Hindi	40% *	30% *	20% *
	* सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों / निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, में "क" क्षेत्र में कुल कार्य-क्षेत्र का 40%, "ख" क्षेत्र में 25%, "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिन्दी में किया जाए।			

वर्ष 2021–22 के लिए राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सीएमडी की शील्ड

वर्ष 2021–22 के लिए **'ग'** क्षेत्र में स्थित कार्यालय/यूनिटों की श्रेणी में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य–निष्पादन करने हेतु **बेंगलूरु कॉमप्लेक्स** को सीएमडी राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

वर्ष 2021–22 के लिए **'ख'** क्षेत्र में स्थित कार्यालय/यूनिटों की श्रेणी में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य–निष्पादन करने हेतु **पुणे यूनिट** को सीएमडी राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

वर्ष 2021–22 के लिए **'क'** क्षेत्र में स्थित कार्यालय/यूनिटों की श्रेणी में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य–निष्पादन करने हेतु **सीआरएल–गा.बाद** को सीएमडी राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

सत्यजीत स्वाई
बीईएल हैदराबाद

अशोक का युद्ध मोह भंग

कलिंग तटीय ओडिशा राज्य का प्राचीन नाम था। भारत के पूर्वी तट पर बसा था कलिंग। संपूर्ण भारत पर एकछत्र राज कर रहे मौर्य मगध साम्राज्य के लिए कलिंग जीत पाना अब तक मुमकिन नहीं हो सका था। कारण था, कलिंग का वीर कौशल और उसकी विशाल सेना। नदियों और समुद्र से घिरे होने के कारण कुछ ही युद्ध नीतियाँ थीं जो अमल में लाई जा सकती थीं और वैसी परिस्थितियों के लिए कलिंग पूर्व से ही तैयार रहा करता था। यही कारण था कि मौर्य साम्राज्य के प्रतापी राजा भारत विजय के उपरांत भी कलिंग पर अपना विजय पताका नही लहरा सके थे। वक्त बदला, और 269 ई.पू. में सम्राट अशोक गद्दी पर बैठे। कलिंग उनके आँखों में भी आर्थिक और राजनैतिक काटें की तरह चुभ रहा था।

विभिन्न मौर्य शासकों द्वारा कलिंग पर आक्रमण के कारण राजनीतिक और आर्थिक दोनों थे। सामरिक दृष्टि से हिन्द महासागर पर कलिंग का कब्जा था, इससे मगध का व्यापार बाधित होता था। गंगा के आंतरिक क्षेत्रों के साथ दक्कन का भी संबंध कलिंग के माध्यम से ही मगध से जुड़ता था, तो मगध का दक्कन मार्ग भी कलिंग के वर्चस्व से प्रभावित होता रहता था। इसके अलावा इतना बड़ा मौर्य मगध साम्राज्य एक छोटे से कलिंग को पराजित न कर सका, ये भी वीर मगध के स्वाभिमान को कचोटने वाले बात थी। इन्हीं सब कारणों से सत्ता संभालने के 7 साल बाद 8वें वर्ष में अशोक ने कलिंग पर आक्रमण कर दिया।

कलिंग युद्ध कई कारणों से प्राचीन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोडथा। 261 ई.पू. में युद्ध ओडिशा के वर्तमान समय में भुवनेश्वर से 4 मील दक्षिण में धौली पहाड़ियों के पास दयान दी के तट पर लड़ा गया था। इस लड़ाई में कलिंग के लगभग 150000 सैनिक मौत के घाट उतार दिए गए। मगध के भी 1 लाख योद्धा मारे गए और न जाने कितनों के अंग–भंग कर दिए गए। युद्ध जीतने के बाद सम्राट अशोक धौली पहाड़ी पर बैठकर युद्ध के मैदान के बाद का दृश्य देख रहे थे। नरसंहार अब अशोक को भी द्रवित करने लगा था। उपगुप्त नाम का एक बौद्ध भिक्षु वहां से गुजर रहा था और उसने अशोक को बहुत उदास मनोदशा में देखा। दुख का कारण जानने के बाद उन्होंने अशोक को बौद्ध धर्म का उपदेश दिया जिससे उनके मन को शांति मिली। सम्राट अशोक ने महसूस किया कि तलवार और रक्तपात के माध्यम से युद्ध जीतना जीत नहीं है, लेकिन लोगों का दिल जीतना एक वास्तविक जीत है। उसी क्षण उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण किया, वे धर्मशोक बन गए।

राज्य की नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इसने मगध साम्राज्यवाद की नीति और मगध राजाओं की आक्रमण और विजय की पुरानी नीति को समाप्त कर दिया। उन्होंने अपने पूरे साम्राज्य में महत्वपूर्ण स्थानों और सीमाओं पर स्तंभों और शिलालेखों का निर्माण किया, जो कि धर्म कहे जाने वाले कानूनों और उपदेशों का एक समूह है जो बड़े पैमाने पर बौद्ध धर्म से प्रेरित थे। अंतर्राज्यीय संबंधों के क्षेत्र में शांति और अहिंसा की एक नई नीति अपनाई जाने लगी। परिणामस्वरूप भारत, अफगानिस्तान, श्रीलंका, मलेशिया, चीन, जापान, सुदूर

पूर्व के बडे हिस्से में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ, हालांकि धीरे–धीरे अधिकांश भारत वापस हिंदू धर्म में वापस आ गया।

19वीं सदी के दौरान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधीजी अहिंसा और सत्य के विचार से गहराई से प्रभावित थे, जिसे उन्होंने शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ अपनी लड़ाई में उपकरण बनाया था। 1950–1990 की अवधि के दौरान मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला ने जातिवाद और रंगभेद के खिलाफ अपने राजनीतिक संघर्षों में गांधी के प्रभाव को स्वीकार किया। सम्राट अशोक के उपदेश के सिद्धांत पंचशील और गुजराल सिद्धांत की विदेश नीति को प्रतिबिंबित करते हैं, जिसमें बातचीत, पारस्परिक सम्मान और धैर्य के माध्यम से शांतिपूर्ण बातचीत के मूल्यों पर जोर दिया गया है।

मोनिका कटारिया
बीईएल पंचकूला

डिजिटल दुनिया

डिजिटल दुनिया है बड़ी निराली,
बच्चे, बड़े, बूढ़े सबके लिए मतवाली।

सारे वादे इसी पर निभाए,
जीने मरने की क़समें खाए,
नहीं दोस्तों के संग चाय की प्याली,
डिजिटल की दुनिया है बड़ी निराली।

डिजिटल से व्यापार, डिजिटल में प्यार,
डिजिटल का हुआ असीमित विस्तार,
डिजिटल पर भावनाओं की दुनिया है ख़ाली,
डिजिटल की दुनिया है बड़ी निराली।

हर कोई इसमें व्यस्त है,
लगता है ज़िंदगी मस्त है,
बिछड़े साथी मिलवाने वाली,
डिजिटल की दुनिया है बड़ी निराली।

व्हाट्सऐप, इंस्टा, फेसबुक कई है ग्रूप,
शोर इसी पर मचाते हैं, ज़बान है चुप,
ईमोजी की भेजते हैं अब ताली,
डिजिटल की दुनिया है बड़ी निराली।

दिखावे के चक्कर में मत पड़ जाना,
डिजिटल का लाभ सोच समझ कर उठाना,
वरना दिल के साथ जेब भी हो जाएगी ख़ाली,
डिजिटल की दुनिया है बड़ी निराली।

दीपिका रेवणकर मंजुनाथ
उत्पाद विकास एवं नवोन्मेष केंद्र
बेंगलूरु

भारत – विश्व का शांति दूत

"सर्वश्रेष्ठ की उत्तरजीविता" अर्थात Survival of the Fittest, ब्रिटिश के बहुश्रुत दार्शनिक हरबर्ट स्पेंसर के इस वाक्यांश के आधार पर वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने यह दावा किया था कि जो जीव–जंतु अपने बदलते पर्यावरण के अनुरूप खुद को ढाल लेते हैं और जो जीव बदलते हालातों का सामना अपनी शक्ति के अनुसार करते हैं, वे वास्तव में बड़ी सहजता के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हैं।यह तथ्य मनुष्यों के सामाजिक सन्दर्भों में भी लागू होता है। प्राचीन काल से ही शक्तिशाली मनुष्यों ने अपनी शक्ति को बढ़ाने की लालसा से कई नीतियां अपनाई थी, जिसके चलते मनुष्य ने अपने राज्य को अपनी उत्पत्ति के अलावा दूर दराज क्षेत्रों में भी स्थापित किया। यह खेद की बात है कि मनुष्य ने अपने बढ़ते प्रभाव को एक ऐसे हत्यारे के हाथों हासिल किया जिसने अनगिनत मासूमों और कमज़ोरों की लाशों पर इन राज्यों की नींव रखीऔर वह निर्दयी हत्यारा और कोई नहीं युद्ध ही था।

इस युद्ध नीति ने बहरहाल सोने की चिड़िया कहलाने वाली, वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धातों पर विश्वास रखने वाली भारत भूमि को भी नहीं बक्शा। भारत इस युद्ध नीति से अपरिचित नहीं है क्योंकि भारत भूमि को युद्ध में भागीदारी होने के लिए बाहरी ताकतों ने बार–बार ललकारा था। युद्ध नीति को बरखास्त करने वाला हमारा देश यह नहीं जताता है कि वह कमजोर या बलहीन है या युद्ध नीति में असमर्थ है, अपितु हमारे ऋषि मुनियों ने तो युद्ध कला में निपुणता हासिल की थी, फिर भी हमारे देश ने हमेशा शांति का चयन किया न कि युद्ध का। इसी कारण भारत देश आज विश्व का शांति दूत कहलाता है और इसकी पुष्टि हम भारत देश के तीन युगों के द्वारा आकलित कर सकते है जो निम्नलिखित हैं –

1) प्राचीन भारत – इस कालखंड को भारत का स्वर्ण युग माना जाता है जब मानवता का गुण चरम सीमा पर था और युद्ध का अस्तित्व नहीं था। सिंधु घाटी जैसी महान सभ्यता का आंकलन आज भी शांति के विषय में प्रस्तुत है। परन्तु खेद की बात यह है कि इस महान सभ्यता का पतन आर्यों के आक्रमण से हुआ।

इसके अलावा, भारत पर विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमण की लम्बी श्रंखला रही हैं। सिकंदर जैसे बाहरी हमलावरों ने भारत पर युद्ध के द्वारा जीत हासिल करने का प्रयास किया। इसके विपरीत भारत देश के राजाओं ने शांति और धर्म के पथ पर चलते अपने सिद्धांतों को पूरे विश्व में फैलाने का प्रयास किया। सम्राट अशोक ने धर्म के द्वारा भारत देश की कीर्ति पूरे विश्व में फैलाई। महान ऋषि – मुनि जैसे पतंजलि, व्यास और हमारे वैज्ञानिक जैसे चरक, वराहमिहिर अपने ज्ञान के प्रकाश से पूरे विश्व में पूजनीय हैं न कि युद्ध नीतियों से। इन सभी अप्रतिम योगदानों के बावजूद, इस सोने की चिड़िया को आक्रमणों का सामना करना पड़ा।

2) मध्यकालीन भारत – यह वो दौर था जब भारत को बाहरी शासकों के लगातार हमलों ने खोखला कर दिया था। महमूद ग़ज़नवी जैसे क्रूर राजाओं का सीधा निशाना भारत और इसकी अनगिनत संपत्ति बन चुकी थी। इन

राजाओं के लगातार आक्रमणों ने हमारे देश को जिन्दा लाश बना दिया था। इनकी बर्बरता और क्रूरता का सामना हमारे देश के राजा जो शांति के पक्षधर थे, नहीं कर पाए और इन सभी राज्यों का पतन हुआ।

क्रूरता का यह सिलसिला सिर्फ हमारी संपत्ति को हथियाने पर नहीं रुका, अपितु इन क्रूर राजाओं ने बड़ी निष्ठुरता से अपने शासन को भारत के जनमानस पर थोपने का प्रयास किया। विडम्बना यह थी कि अपने राज्य एवं अपनी भूमि से भारतवासियों ने अपनी स्वाधीनता खो दी और अपने ही देश में इन्हें जजिया जैसे अन्यायपूर्ण कर देने पर विवश कर दिया था, जिसका अंजाम यह हुआ कि भारत के जनमानस को शांति एवं भाईचारे के सिद्धांतों के बदले दासता झेलनी पड़ी।

3) आधुनिक भारत– भारत में दासत्व का सिलसिला मध्यकालीन भारत युग में खत्म नहीं हुआ, अपितु आधुनिक युग में यह परंपरा अपने चरम पर पहुंच गई। अंग्रेजों के जंजीरों ने पूरे भारत देश में दहशत मचा रखा था। हर तरफ कोहराम और बेबसी का तांडव हो रहा था। इसी दौरान, हर भारतवासी के दिलों दिमाग में एक ही सवाल गूंजता रहा "हम शांति के पक्षधर रहे, हमने किसी को धर्म भ्रष्ट करने पर मजबूर नहीं किया, हमने किसी देश पर युद्ध नहीं थोपा, फिर हमें अपनी भूमि पर गुलाम की तरह जीने के लिए क्यों विवश किया जा रहा है?"इन सवालों के उभरते ज्वाले को भारतवासियों ने अहिंसा के माध्यम से शांत करने का प्रयास किया और इसी अहिंसा को अस्त्र बनाकर भारत माँ को अंग्रेजों के 200 सालों की क्रूरता से आजादी दिलाई। इसी शांति और अहिंसा के प्रकाश ने अन्य औपनिवेशिक देशों को साम्राज्यवादियों के चंगुल से आजादी हासिल करने में योगदान दिया।

अब, जब हम सिंहावलोकन करते है, तब यह प्रश्न उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि क्या भारत देश इतना कमजोर था कि वह अपनी संप्रभुता को बचाने में असमर्थ रहा। यह तथ्य हम स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि इस देश ने वीर योद्धा जैसे भगवन श्री कृष्ण, चंद्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त जैसे महान योद्धाओं को जन्म दिया जिनकी युद्ध नीति और कुशलता आज भी विश्व में अनुकरणीय है। अपितु हमने अमन से जीने का प्रयास किया और इसी संदेश को पूरे विश्व में प्रसारित किया।हमारे पूर्वज चाहते तो युद्ध के प्रयोग से हमें आजादी दिला सकते थे, लेकिन हमारे पूर्वजों की यह मान्यता थी कि युद्ध से सरहदें जीती जा सकती हैं मनुष्य का मान और सम्मान नहीं। क्रूरता से हमारी छवि इतिहास के पन्नों पर लाल अक्षरों से लिखी जाती जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियां अपने इतिहास पर शर्म महसूस करती। यही कारण है कि आज भारत देश को शांति का दूत माना जाता है।

इसी शांति के सिद्धांत को हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंण्नेहरू जी ने भी गुटनिरपेक्ष आंदोलन के जरिए अमन और निरस्त्रीकरण का चयन किया और इसके नक्शे कदम पर चलते कई अन्य देशों ने इस आंदोलन को अपना समर्थन व्यक्त किया, जिसके कारण तीसरे विश्व युद्ध की संभावनाएं टल गईं। लेकिन जैसे भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है, जब भी कोई युद्ध के जरिए, हमारे कर्म–धर्म और शांति को ललकारे तब शांति की पुनःस्थापना के लिए युद्ध अनिवार्य है और इसी के चलते, जब भी हमारे पड़ोसी देशों ने हमारी शांति और संप्रभुता को ललकारा, हमने उसका मुँहतोड़ जवाब दिया, चाहे वो 1965 या 1999 का युद्ध हो, या 2016 का सर्जिकल स्ट्राइक हो।भारत देश ने परमाणु शक्ति में भी सफलता हासिल की है परन्तु हमारे देश ने "नो फर्स्ट युज़" और "जियो और जीने दो" के सिद्धांतों पर चलते हुए पूरे विश्व को यह आश्वस्त किया कि भारत देश शांति का प्रतिपादक था, है और रहेगा। भारत के इसी प्रयास को आज पूरा विश्व पूजता है और डंके की चोट पर हम यह कह सकते है कि भारत देश विश्व का शांति दूत है और हम भारतवासियों को हमारे देश पर गर्व है।

वन्दे मातरम

देवराज
बीईएल, गाज़ियाबाद

युद्ध बनाम शान्ति

"दूसरों की जय से पहले, खुद की जय करें"

प्रकृति में सभी पशुओं और पक्षियों के बीच भोजन, स्थान और प्रजनन हेतु संघर्ष पाया जाता है, किन्तु प्रकृति ने मनुष्य को अन्य पशु–पक्षियों की तुलना में अधिक बुद्धिमान बनाया है ताकि वह मानव कल्याण हेतु कार्यरत हो और अपने आंतरिक विकारों पर विजय पाकर आध्यात्मिक उन्नति कर सके।

मनुष्य के आंतरिक विकारों में काम, क्रोध, मद (अहंकार), लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि प्रमुख माने जाते हैं। अहंकार से प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होती है, आपसी प्रतिस्पर्धा से प्रतिद्वंदिता और प्रतिद्वंदिता से संघर्ष उत्पन्न होता है। यही संघर्ष छोटे स्तर पर लड़ाई और बड़े स्तर पर युद्ध कहलाता है। यदि युद्ध में कई राष्ट्र सम्मिलित हों तो इसे विश्वयुद्ध कहा जाता है।

विश्व स्तर पर, प्राचीन काल से ही मनुष्यों में अपनी सीमाओं की रक्षा एवं उसके विस्तार हेतु, धन संबंधी लूटपाट हेतु, अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करने हेतु आपसी संघर्ष व युद्ध होते रहे हैं। युद्ध किसी का भी हितैषी नहीं होता, विशेष तौर पर मानवता का तो नहीं। समरांगण में सेनाएं जिस तरह से एक दूसरे के खून की प्यासी होकर लड़ती है, उन्हें देखकर तो लगता है कि ईश्वर ने इन्हें मानव बना कर गलती कर दी। जिस मानव को दूसरे मानव की भलाई हेतु कार्यरत होना था, वह दूसरे मानव पर आक्रमण करके उसके खून का प्यासा बना बैठा होता है। यदि यही मार–काट जीवन का वास्तविक उद्देश्य होता, तो शायद मगध नरेश सम्राट अशोक कलिंग युद्ध के बाद "बुद्धम शरणम गच्छामि" की राह पर न जाते।

कुछ राष्ट्रों की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं ने प्रथम विश्वयुद्ध को जन्म दिया था। इसमें हुए जान और माल के नुकसान की पुनरावृत्ति रोकने हेतु राष्ट्र संघ का निर्माण किया गया था किंतु यह असफल रहा और आगे चलकर द्वितीय विश्व युद्ध भी हुआ, जिसमें एक युद्ध पर आमादा राष्ट्र को रोकने के लिए दूसरे राष्ट्र को परमाणु हथियारों तक का इस्तेमाल करना पड़ा था। द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने पर, विश्व शांति की बहाली हेतु, संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। किंतु इसी संयुक्त राष्ट्र संघ की मौजूदगी में कई युद्ध हुए और हो रहे हैं जो कि चिंता का विषय हैं। इनमें भारत–पाकिस्तान युद्ध, भारत–चीन युद्ध, अमेरिका–इराक युद्ध, शीत युद्ध और पिछले दो महीनों से चल रहा रूस–यूक्रेन युद्ध भी शामिल हैं। अतः संयुक्त राष्ट्र संघ भी युद्ध को रोकने का प्रभावी प्रयास नहीं कहा जा सकता।

युद्ध के परिणामस्वरूप दोनों ही पक्षों की हानि होती है। इसमें होने वाली जन–क्षति से कई बालक अनाथ हो जाते हैं, कई स्त्रियां विधवा हो जाती हैं, कई माताओं की गोद सूनी हो जाती हैं, कई लोग घायल होते हैं। साथ ही, धन–क्षति से महंगाई

बढ़ती है, अकाल और भुखमरी के हालात बनते हैं, बेरोजगारी बढ़ती है और अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त भार पड़ता है जिससे राष्ट्रों का सकल घरेलू उत्पाद बिगड़ जाता है और उनकी विकास दर नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है।

प्राचीन काल में अस्त्र–शस्त्रों से लड़े जाने वाले युद्ध आज विज्ञान की प्रगति के चलते नाभिकीय, रासायनिक और जैविक जैसे विशेष हथियारों से युक्त हो चुके हैं। नाभिकीय हथियार मनुष्य को तात्कालिक एवं दीर्घकालिक रूप से बीमार कर देते हैं। 1945 में हुए परमाणु हमलों की वजह से आज तक जापानी लोगों में विकिरण का दुष्प्रभाव पाया जाता है। रासायनिक और जैविक युद्धों से कई तरह की बीमारियां फैलती हैं जिनके निवारक उपाय अज्ञात भी हो सकते हैं।

युद्ध में होने वाली बमबारी से सुन्दर इमारतें, बाँध, अस्पताल, रेल्वे स्टेशन, फैक्टरी आदि सभी नष्ट हो जाते हैं। हरे–भरे खेत बंजर भूमि में बदल जाते हैं। विस्फोटक पदार्थों से पर्यावरण प्रदूषित होता है, शहर शमशान और वीरान खंडहरों में परिवर्तित हो जाते हैं।

युद्ध में पकड़े गए युद्धबंदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है, उन्हें यातनाएँ देते हुए बर्बरतापूर्वक मौत के घाट उतारा जाता है। स्त्रियों के साथ बलात्कार किया जाता है, बच्चे और बूढ़ों को भी मार डाला जाता है। तो भला किस प्रकार से युद्ध को मानवता के पक्ष में कहा जाए।

एक तार्किक प्रश्न, सभी आक्रमणकर्ता देशों से, क्या आपके सभी नागरिक पूरी तरह से सुखी हैं (आर्थिक–सामाजिक–शारीरिक–मानसिक एवं आध्यात्मिक)? क्या आपके देश में बेरोजगारी नहीं है? क्या आपके यहां कोई भूखा नहीं सो रहा? क्या आपके यहाँ महंगाई पूरी तरह से नियंत्रित है? क्या आपके यहां सभी शिक्षित हैं? यदि नहीं, तो फिर आप अपने देश के नागरिकों पर ध्यान न देकर दूसरे देश पर आक्रमण क्यों करते हैं? इन मुद्दों पर गहराई से आत्म–चिंतन करने की आवश्यकता है।

आज के परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य व्यक्तिगत स्वार्थ व अहंकार से प्रेरित संघर्ष को भूलकर अपने अंतर के विकारों पर विजय पाने की कोशिश करे। सभी राष्ट्र अपने रक्षा बजट को टटोलें तो पाएंगे कि अरबों–खरबों रुपए युद्ध विषयक सामग्री के निर्माण एवं रख–रखाव पर खर्च किए जाते हैं। सोचिए यदि इन खरबों रुपयों का कुछ अंश भी यदि मानव–कल्याण में लगाया जाता तो कितना हित होता। एक ओर कुछ लोग अपनी साम्राज्यवादी भूख से पीड़ित हैं तो दूसरी ओर कुछ लोग अपने पेट की भूख से। ऐसी विसंगतियों का समाधान सिर्फ भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुंबकम (पूरी धरती ही मेरा कुटुंब है) जैसी उच्चतम मनवातावादी सोच से ही संभव है। एकमात्र, भारतीय संस्कृति ही, हमेशा, इस पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखती आई है। यही कारण है कि प्रात:कालीन प्रार्थनाओं में "सर्वे भवंतु सुखिन:" की प्रधानता होती है (सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, कोई दुखी न हो और सभी सुखी रहें)। यही इन युद्धों का स्थाई समाधान है।

शहद और अदरक से कफ होगा दूर

अदरक को पानी में उबालकर और फिर शहद के साथ खाया जाए तो यह कफ, गले मेंखराश और गला खराब होने की दिक्कत की बेस्ट रेमेडी है। अदरक को शहद के साथ खाने से गले और कंठ में होनेवाली सूजन और जलन में राहत मिलती है।

सावधानी बरतें–डायबीटीज के मरीज शहद की कितनी मात्रा का सेवन कर रहे हैं इसे लेकर सावधान रहें क्योंकि इससे उनका शुगर लेवल प्रभावित हो सकता है।

मनोज कुमार नागवंशी
अंतरराष्ट्रीय विपणन प्रभाग

मेक इन इंडिया अभियान
स्वदेशी रक्षा विनिर्माण क्यों आवश्यक है?

भारत में तकनीक आधारित विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) को बढ़ावा देने एवं देश की अर्थव्यवस्था के व्यापक व बहुमुखी संवर्धन के लिए भारत सरकार ने 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की शुरुआत की है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है कि आगामी एक–डेढ़ दशक में वैश्विक निवेश एवं स्वदेशी विनिर्माण शक्ति में द्रुत गति से उत्तरोत्तर वृद्धि कर, संरचनात्मक ढांचागत सुविधाओं का विकास करते हुए अन्य अभिनव प्रयोगों के माध्यम से भारत को एक वैश्विक औद्योगिक केंद्र के रुप में परिवर्तित किया जाए ताकि बढ़ती जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार लाकर भारतीय समाज प्रत्येक स्तर को आधुनिक व प्रगतिशील धारा से और अधिक सानिध्यता से जोड़ा जा सके। 'मेक इन इंडिया' भारत सरकार की एक अनूठी पहल है जिसका उद्देश्य भारत में अधिक से अधिक उत्पादों के विकास, निर्माण और संयोजन के प्रति विभिन्न कम्पनियों व उद्यमियों को अधिकाधिक प्रोत्साहित कर इस हेतु आवश्यक समर्थन जैसे निवेश इत्यादि मुहय्या करना है। 'मेक इन इंडिया' योजना के अंतर्गत घरेलू और विदेशी, दोनों प्रकार के निवेशकों के लिए देश में अनुकूल माहौल उपलब्ध कराने की दिशा में पर्याप्त व त्वरित कदम उठाए जा रहे हैं।

'मेक इन इंडिया' देश के विनिर्माण क्षेत्र के विकास को केंद्र में रखते हुए देश में उद्यमशीलता को बढ़ावा देता है। यह आधुनिक और कुशल बुनियादी संरचना देकर विदेशी निवेश के लिए नए औद्योगिक क्षेत्रों को खोलने और सरकार एवं उद्योग के बीच एक बेहतर साझेदारी का निर्माण करने की ओर भारत सरकार का एक सराहनीय कदम है। इस पहल ने रोजगार सृजन और कौशल वृद्धि के लिए 25 आर्थिक क्षेत्रों को लक्षित किया है।

मेक इन इंडिया के मापनीय उद्देश्य क्या हैं?

1. मध्यावधि की तुलना में निर्माण क्षेत्र में 12–14 फीसदी सालाना वृद्धि हासिल करना ।
2. देश के सकल घरेलू उत्पाद में निर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी साल 2025 तक बढ़ाकर 25: करना ।
3. निर्माण क्षेत्र में साल 2022 तक 10 करोड़ अतिरिक्त रोजगारों का सृजन करना ।

मेक इन इंडिया के चार स्तंभ क्या हैं?

1. नई प्रक्रिया 2. नई अवसंरचना 3. नए क्षेत्र 4. नई सोच

मेक इन इंडिया में कौन से कारोबार शामिल हैं?

'मेक इन इंडिया' में ऑटो कंपोनेंट, ऑटोमोबाइल, विमानन, जैव प्रौद्योगिकी और रसायन क्षेत्र से संबंधित विनिर्माण शामिल है। इसमें रक्षा उत्पादन, विद्युत मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम डिजाइन और निर्माण, खाद्य प्रसंस्करण, सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) एवं व्यावसायिक प्रक्रिया प्रबंधन (बीपीएम), चमड़ा और मीडिया एवं मनोरंजन क्षेत्र भी सम्मिलित किए गए हैं। इसके साथ ही खदान, तेल एवं गैस, फार्मा, बंदरगाह एवं नौवहन व रेलवे जैसे कारोबारों को इसके अंतर्गत लिया गया है। इसके अलावा, 'मेक इन इंडिया' में सड़क एवं राजमार्ग, नवीकरणीय ऊर्जा, अंतरिक्ष, वस्त्र एवं परिधान, थर्मल पावर, पर्यटन और आतिथ्य के साथ कल्याण कार्यक्रम को भी विकसित करने का ध्येय है।

'मेक इन इंडिया' का विदेशी निवेश पर क्या प्रभाव पड़ा है?

कुछ प्रमुख संरक्षित क्षेत्रों को अब प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए खोल दिया गया है । रक्षा क्षेत्र में एफडीआई नीति को उदार बनाया गया है और एफडीआई की सीमा को 49% तक बढ़ाया गया है। अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के लिए रक्षा क्षेत्र में 100% एफडीआई को अनुमति दी गई है। रेल बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में निर्माण, संचालन और रखरखाव में स्वचालित मार्ग के तहत भी 100% एफडीआई की अनुमति दी गई है। बीमा और चिकित्सा उपकरणों के लिए उदारीकरण मानदंडों को भी मंजूरी दी गई है।

मेक इन इंडिया योजना से क्या फायदा हुआ है?

सरकार ने भारत में कारोबार करने की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए कई कदम उठाए हैं। कई नियमों एवं प्रक्रियाओं को सरल कर नियमित किया गया है। इसके साथ ही कई वस्तुओं को लाइसेंस की जरुरतों से भी मुक्त कर दिया गया है। सरकार का लक्ष्य देश में संस्थाओं के साथ–साथ अपेक्षित सुविधाओं के विकास द्वारा व्यापार के लिए मजबूत बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना है। सरकार ने व्यापारिक संस्थाओं के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने के लिए औद्योगिक गलियारों और स्मार्ट सिटी का विकास करने की भी अपनी मंशा जाहिर की है। राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन के माध्यम से कुशल मानव शक्ति प्रदान करने के सतत प्रयास जोरशोर से जारी हैं। पेटेंट एवं ट्रेडमार्क पंजीकरण प्रक्रिया के बेहतर प्रबंधन के माध्यम से अभिनव प्रयोगों को प्रोत्साहित करने पर भी भरपूर ध्यान जा रहा है।

मेक इन इंडिया रक्षा निर्माण के लिए क्यों आवश्यक है?

भारत का वार्षिक सैन्य खर्च विश्व के कुल सैन्य खर्च का लगभग 3.7% है, जो इसे दुनिया में तीसरा सबसे अधिक सैन्य खर्च करने वाला देश बनाता है। भारत के पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी स्थायी सेना है। वित्तीय वर्ष 2020–21 के केंद्रीय बजट के अनुसार, रक्षा के लिए कुल आवंटन लगभग 62.85 अरब अमेरिकी डॉलर है। इस राशि में लगभग एक चौथाई भाग पूंजीगत व्यय के लिए आबंटित किया जाता है। बीते वित्तीय वर्ष 2020–21 में रक्षा निर्यात का मूल्य रु. 5,711 करोड़ है।

रक्षा पर भारत की जरूरतों को बड़े पैमाने पर आयात द्वारा पूरा किया जाता है। निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए रक्षा क्षेत्र के खुलने से विदेशी मूल उपकरण निर्माताओं (ओईएम) को भारतीय कंपनियों के साथ रणनीतिक साझेदारी करने में और मदद मिलने की आशा है। यह उन्हें घरेलू बाजारों के साथ–साथ वैश्विक बाजारों में लक्ष्य बनाने में सक्षम बनाएगा। घरेलू क्षमताओं के निर्माण में मदद करने के अलावा, यह लम्बी अवधि में निर्यात को भी बढ़ावा देगा।

रक्षा क्षेत्र में निवेश करने के कारण –

वर्ष 2014 से दिसंबर 2019 तक रक्षा मंत्रालय ने भारतीय उद्योगों के साथ 180 से अधिक अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए हैं। इन अनुबंधों का मूल्य लगभग 25.8 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक था। रक्षा मंत्रालय ने 2024 तक एयरोस्पेस और अन्य रक्षा वस्तुओं और सेवाओं में 1.75 लाख करोड़ रुपये का कारोबार हासिल करने का लक्ष्य रखा है, जिसमें 35,000 करोड़ रुपये का निर्यात भी शामिल है। अनुकूल सरकारी नीति द्वारा आत्मनिर्भरता, स्वदेशीकरण और प्रौद्योगिकी उन्नयन को बढ़ावा दिया जा रहा है। नीतियों का उद्देश्य रक्षा क्षेत्र में निर्यात के लिए क्षमताओं के विकास सहित अर्थव्यवस्था को और बढ़ाना है। भारत की व्यापक आधुनिकीकरण योजनाओं में गृहभूमि सुरक्षा और रक्षा सोर्सिंग हब के रूप में बढ़ते आकर्षण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। भारतीय सेना ने मानव रहित प्रणालियों में फैली छः नई 'मेक–द्वितीय परियोजनाओं' का

अनावरण किया, ऐसी प्रणालियों का मुकाबला करने के लिए प्रौद्योगिकियों के साथ–साथ वायु रक्षा क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उभरते समाधान भी सम्मिलित हैं।

रक्षा क्षेत्र में बढ़ती मांग के साथ सरकार ने इसे आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देने के लिए मुख्य क्षेत्रों में से एक के रूप में पहचाना है। रक्षा आधुनिकीकरण का समर्थन करने के लिए, बजट 2021–22 में रक्षा पूंजी पर व्यय में पिछले वर्ष की तुलना में 18.75% की वृद्धि की गई है। यह पिछले 15 वर्षों में अपने तरह की अब तक की सबसे अधिक वृद्धि है।

भारत सरकार ने बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए निजी क्षेत्र से रक्षा निर्माण कंपनियों की भागीदारी बढ़ाने का आह्वान किया है। भारतीय रक्षा उद्योग के खुलने से विदेशी तकनीकीगत निर्माताओं के लिए भारत में रक्षा उपकरण निर्माताओं के साथ रणनीतिक साझेदारी में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

सरकार का लक्ष्य देशभर में एक मजबूत इको–सिस्टम और सहायक सरकारी नीतियां बनाकर पारदर्शिता, पूर्वानुमेयता और व्यापार करने में सुगमता सुनिश्चित करना है। इस दिशा में सरकार ने लाइसेंस–मुक्ति, विनियमन, निर्यात प्रोत्साहन और विदेशी निवेश के प्रति उदारीकरण लाने के लिए कदम उठाए हैं। भारत सरकार ने नए रक्षा औद्योगिक लाइसेंस की मांग करने वाली कंपनियों के लिए स्वचालित मार्ग के माध्यम से रक्षा क्षेत्र में 74 प्रतिशत तक और सरकारी मार्ग द्वारा 100% तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि की है।

हमारे लिए – बीईएल भी भारत सरकार की इस मुहिम में सहयोग कर राष्ट्र के विकास व देशी व विदेशी बाजारों में स्वयं को सशक्त बनाने की दिशा में अग्रसर है। हम सभी को तेजी से बदलते इस परिदृश्य में आगे बढ़कर सकारात्मक योगदान देना चाहिए।

राजभाषा की प्रभावी कार्यान्वयन के 12 'प्र'

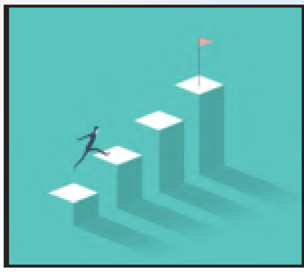
प्रेरणा

प्रोत्साहन

प्रेम

प्रयोग

प्रशिक्षण

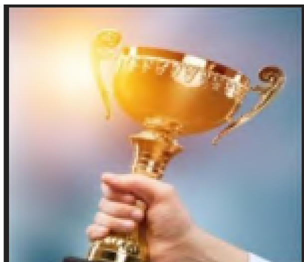
प्राइज़

प्रचार

प्रसार

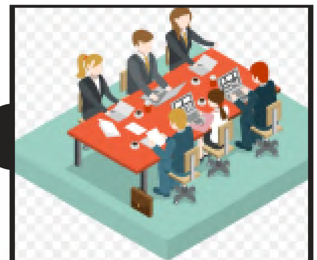
प्रबंधन

प्रयास

प्रतिबद्धता

प्रोन्नति

राजन शर्मा
बीईएल, गाज़ियाबाद

शांतिदूत सम्राट अशोक

"इतिहास में सहस्त्रों राजाओं एवं महाराजाओं के नाम हैं, परंतु अशोक का नाम एक सितारे की भांति सदा चमकता रहेगा।" – **एच.जी.वेल्स**

कालांतर से ही युद्ध मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रहे हैं। कभी युद्ध प्रकृति के विरुद्ध हुए और कभी प्रकृति के संसाधनों के लिए अन्य मनुष्यों के साथ। परंतु एक बात सत्य है कि इन युद्धों ने मानव जाति व संस्कृति के विकास में जो भूमिका निभाई है उससे उसकी दिशा व दशा दोनों ही परिवर्तित हुई हैं और आज भी हो रही हैं।

इतिहास में ऐसे अनेक युद्धों का वर्णन है जो या तो आपसी शत्रुता व प्रतिघात के लिए किए गए थे या किसी दूसरे राज्य व उसके संसाधनों पर नियंत्रण करने हेतु। कारण भले ही कुछ हो, इन युद्धों का प्रमुख उद्देश्य अपने वर्चस्व व शक्ति को स्थापित करना रहा है जो वर्तमान में हो रहे युद्धों के लिए भी उचित बैठता है। इन युद्धों से समाज में अनुकूल व प्रतिकूल प्रभाव पड़े हैं। जहां एक ओर विजेताओं को धन, ऐश्वर्य एवं कीर्ति मिली तो दूसरी ओर हिंसा व नरसंहार ने युद्ध के प्रति समाज में भय व घृणा को जन्म दिया। इन सब के बीच इतिहास में कुछ ऐसे भी युद्धों का वर्णन है जिनमें वीभत्सता से विजेताओं के हृदय को भी विचलित कर दिया। भारतीय इतिहास में भी एक ऐसा युद्ध हुआ जिसने भारत को एक ऐसा महान शासक दिया जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बन गया।

यह बात है आज से 2300 वर्ष पुरानी जब प्राचीन भारत में दो सेनाओं के बीच लड़े गए एक भीषण युद्ध ने भारतीय इतिहास की दिशा एवं दशा बदल दी। यह बात है कलिंग युद्ध की जिसने सम्राट अशोक को प्रियदर्शन सम्राट अशोक महान बना दिया।

अशोक द्वारा कलिंग पर आक्रमण करने तथा उन पर कलिंग युद्ध के प्रभाव को जानने से पूर्व उस समय के विषय में थोड़ी जानकारी होना आवश्यक है। उस काल में प्राचीन भारत 16 महाजनपदों में बंटा हुआ था जिनमें प्रमुख थे मगध, अंग, कोसल, कुरु, पांचाल, गांधार इत्यादि। इन जनपदों में मगध सबसे शक्तिशाली था जिसके शौर्य और कीर्ति को जरासंध, बिंबिसार, अजातशत्रु, शुंगवंश, नन्दवंश आदि शक्तिशाली राजाओं व राजवंशों ने शिखर तक पहुंचाया। लगभग 321 ईसा पूर्व में चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से मगध के राजा धनानन्द को परास्त कर मौर्य वंश की स्थापना की। उनके बाद उनके पुत्र बिन्दुसार ने मौर्य साम्राज्य को और फैलाया। लगभग 270/268 ईसा पूर्व में बिन्दुसार के पुत्र अशोक ने अपने भाइयों को हराकर मगध की सत्ता को अपने हाथों में लिया और मौर्य साम्राज्य को और अधिक शक्तिशाली बनाया।

इसी मौर्य साम्राज्य के दक्षिण–पूर्वी छोर पर था एक छोटा–सा राज्य कलिंग जो वर्तमान में ओडीशा व उत्तरी आंध्र प्रदेश राज्यों में स्थित है। कलिंग दक्षिण क्षेत्र के व्यापार मार्ग एवं बंगाल की खाड़ी के तटीय व्यापार को नियंत्रित करता था तथा घने वनों और खनिजों की प्रचुर मात्रा होने के कारण एक समृद्ध राज्य था। राजनीतिक व सांस्कृतिक रूप से सशक्त होने के कारण कलिंग सैन्य क्षमता में भी मौर्य साम्राज्य को चुनौती देता था। कलिंग की शक्ति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता था कि न केवल नन्द वंश अपितु सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा कई प्रयास करने के बाद भी कलिंग स्वतंत्र था।

जब 268 ईसा पूर्व में अशोक ने मौर्य साम्राज्य की सत्ता संभाली तब उसकी पहली चुनौती कलिंग की शक्ति ही थी। कलिंग मौर्य साम्राज्य के दक्षिणी एवं केंद्रीय भागों के लिए एक संकट था तथा दक्षिण के व्यापार मार्गों पर नियंत्रण होने के कारण वह मौर्य व्यापार को भी क्षति पहुंचा रहा था। अपने साम्राज्य पर मंडरा रहे इस संकट से निपटने के लिए अशोक ने कलिंग पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन करने का निर्णय लिया।

261 ईसा पूर्व में अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई कर दी। दया नदी के तट पर तथा पास ही स्थित धौली पहाड़ियों पर मौर्य एवं कलिंग की सेनाएँ आमने–सामने खड़ी हो गईं और एक भीषण संग्राम हुआ। कलिंग की सेना ने अपनी पूरी क्षमता से मौर्य सेना का सामना किया परंतु मौर्य सेना की प्रचंड शक्ति व सैन्यबल के समक्ष वह टिक नहीं पायी। कहा जाता है कि उस नरसंहार में कलिंग के 1,50,000 से अधिक सैनिक मारे गए थे। मौर्य सेना को भी भारी क्षति पहुंची थी और उसके भी लगभग 1,00,000 सैनिक मारे गए थे। युद्ध इतना प्रचंड था कि दया नदी का पानी व तट खून से लाल हो गए थे।

युद्ध के समाप्त होने के पश्चात जब अशोक युद्धभूमि में गया तो वहाँ का दृश्य देख कर उसकी आत्मा काँप गयी। पीड़ा से तड़पते सैनिकों की चीखें, स्त्रियों एवं बच्चों की करुण पुकार व रुदन जब उसके कानों में पड़ी तो उसका मन आत्म–ग्लानि से भर गया। उसने स्वयं को इस नरसंहार का उत्तरदायी माना और निर्णय लिया कि वह भविष्य में कभी युद्ध नहीं लड़ेगा। अशोक के द्वारा युद्ध जीतने के पश्चात भी युद्ध न लड़ने के इस निर्णय ने उसके जीवन में एक नए अध्याय का आरंभ किया।

अशोक ने निर्णय लिया कि अब वह लोगों के हृदय को जीतेगा न कि किसी राज्य को। उसने धर्म–विजय के मार्ग पर चलने का निश्चय किया और अपना जीवन प्रजापालक के रूप में व्यतीत करना आरंभ किया। उसने अपने विराट साम्राज्य में धर्म के प्रचार हेतु धर्म–महामत्ताओं को नियुक्त किया ताकि जनसाधारण को उसके द्वारा बताए गए धर्म व आचरण से अवगत कराया जा सके। उनके इन प्रयासों से न केवल मौर्य साम्राज्य अपितु पड़ोसी राज्यों में भी शांति का वातावरण स्थापित हुआ। 257 ईसा पूर्व में अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया और उसका प्रचार–प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने पुत्र महेंद्र व पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु श्रीलंका भी भेजा। अशोक के इन प्रयासों से बौद्ध धर्म भारत ही नहीं अपितु दक्षिण व दक्षिण–पूर्वी में स्थापित हुआ।

अशोक के विचार व उनकी शांति के प्रयास अपने समय से आगे थे तथा उनका युद्ध न करने का निर्णय उनकी उदारता व उनके प्रायश्चित का पर्याय है। यही कारण है कि इतिहास में उनका नाम एक महान शासक के रूप में लिया जाता है। अशोक विश्व–शांति के पर्याय बने तथा महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आदि महान व्यक्तियों के आदर्श बने। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने अशोक के विषय में कहा था कि – "उनके विचार एवं आदर्श आज भी हमसे एक ऐसी भाषा में संवाद करते हैं जिसे हम सरलता से समझ सकते हैं और उनका पालन कर सकते हैं।"

आज जब मानव जाति आतंकवाद, गृह–युद्ध, असहिष्णुता एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे विवाद व युद्धों से त्रस्त है तब सम्राट अशोक महान के विचार हमारे मार्गदर्शक बन सकते हैं व विश्व में शांति की स्थापना कर सकते हैं। बस प्रयास करने की बात है क्योंकि प्रश्न मानव सभ्यता व संसार के भविष्य का है।

विनोद कुमार
केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला
गाज़ियाबाद

"युद्ध"

मानव सदियों पहले सभ्य बन गया था और आज भी सभ्य है। मानव ने सुख शांति के साथ जीना सीखा है, साथ ही प्रकृति द्वारा प्रदान संसाधनों का उपयोग करते हुए मानव ने अनेक चीज़ों की ख़ोज एवं आविष्कार किए परंतु मानव अपनी इच्छाओं, धन और शक्ति पर पूरी तरह से विजय प्राप्त नहीं कर सका, जिसके कारण मानव अपने पड़ोसियों से लड़ता–झगड़ता रहता है, जो आगे चलकर राष्ट्र की लड़ाई अथवा युद्ध का स्वरूप धारण कर लेता है।

युद्ध के विषय में किसी ने सच कहा हैं "यदि शांति के समय विज्ञान एक देवदूत हैं, तो युद्ध के समय यह एक शैतान", अर्थात विज्ञान की अत्यधिक प्रगति हमारी सभ्यता के लिए एक संकट भी बनती है। आज विज्ञान ने मनुष्य के हाथों में असीमित शक्ति दे दी है। हालांकि नए–नए आविष्कार मानव कल्याण के लिए हो रहे हैं, किन्तु अधिकांशतः उनका दुरूपयोग हो रहा है। आज विज्ञान हमारा सबसे बड़ा शत्रु बन गया है। यह संसार में खुशियाँ लाने की अपेक्षा मौत, विपति और विनाश ला रहा है।

युद्ध से कभी किसी का भला नहीं हुआ है भला? बार–बार आक्रमण करके दोनों पक्षों को अशांति के सिवा कुछ नहीं मिलता और इसका कुप्रभाव वहाँ के आम जन–मानस के जीवन को नरक बना देता है। लेकिन कभी कोई भी देश अपने आम जन–मानस पर अत्याचार करे, गुलाम बना कर उसका शोषण करे तब उस स्थिति में कभी–न कभी युद्ध जायज़ है। प्राचीन काल से ही युद्ध होते आ रहे हैं। महाभारत का उदाहरण हम ले सकते हैं ।

सुख–दुःखेसमे क्रत्वा लाभा–लसों जयाजयो।
ततो युध्याय युज्यस्व नैवम पापमवापस्यसि।।

अर्थात सुख–दुख, लाभ–हानि, जय–पराजय को समान दृष्टि से देखते हुए तैयार हो जाओ। यदि इस प्रकार के निश्चय के साथ लड़ोगे तो किसी प्रकार का पाप नहीं लगेगा। परंतु अपने देश के हित में युद्ध जीतने के लिए किसी को मारना पड़े तो वो अधर्म नहीं कहलाता है। लेकिन हरे क्षेत्र, जीव, खेतों को नुकसान पहुंचाना अधर्म और अन्याय है। ऐसा भी कहा गया है कि युद्ध में सबल को मारना वीरता का कृत्य माना गया है, लेकिन सोते हुए व्यक्ति को मारना, निर्बल की हत्या करना आदि ये सब अपराध है। लेकिन जब बात अपने देश की रक्षा की आती है तो युद्ध जायज है।

युगों की साधना और प्रयत्नों से मानव जिस सभ्यता, संस्कृति एवं उपयोगी साधनों–प्रसाधनों का निर्माण करता है, युद्ध एक ही झटके में सबकुछ नष्ट कर देती है।

युद्ध मानवता के सभी उच्च मानक–मूल्यों, सुख–शांति और समृधि की उपलब्धियों को क्षण भर में समाप्त कर देता है, युद्ध के कारण अविश्वास और तनाव का वातावरण बन जाया करता है, फिर वह कभी चैन नहीं लेने देता। मानव की मूल समस्याओं की ओर से ध्यान हटा कर, युद्ध की तैयारियों में लीन कर दिया जाता है। मनुष्य की शक्ति, समय और साधन सभी कुछ उसी ओर केंद्रित होकर रह जाते हैं और परिणामस्वरूप जन–माल की भयंकर हानि होती है।

अतः हमें आज से ऐसी चेष्टा आरंभ करनी चाहिए कि युद्ध का जिन्न हमेशा के लिए बोतल में बंद हो और सागर की गहराई में डूब जाए। मानवता और उसके भविष्य की सुरक्षा के लिए ऐसा करना अति आवश्यक है।

डॉ उषा श्रीवास्तव
प्रोफेसर (से.नि.), हिंदी एवं भाषा विभागाध्यक्ष
आचार्या इंस्टीट्यूट ऑफ ग्रेजुएट स्टडीज़, बेंगलूरु

युद्ध और शांति

युद्ध में–

युद्ध में टूट कर बिखर जाती हैं, हँसती खिलखिलाती जिन्दगियाँ,
एक धमाके से हो जाती है, किरच–किरच ,काँच की तरह।।
युद्ध में–आबाल, वृद्ध, अबलाएं भागते हैं,
बदहवास होकर चीखते, चिल्लाते,
प्रार्थना करते हैं, अपनों की सलामती के लिए।।
युद्ध में–ढेर हो जाते हैं, बारूद के गोले के साथ,
मकान, इंसान और असबाब बदल जाते हैं, राख के ढेर में तमाम।।
ईश्वर–खड़ा देखता रहता बस असहाय सा,
अपनी संतान के, विध्वंसक रूप को,पछताता हुआ ऐसे सृजन के लिए।
सृष्टि निर्माण करते समय, मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा था।।
युद्ध में–खत्म हो जाती है जिंदगियाँ, जीने के पहले,
बंद हो जाता है सृजन, नव निर्माण का अंत हो जाता है,
नजर नहीं आती, सकारात्मकता ,दूर दूर तक कहीं।।
युद्ध में–रुक जाता है विकास, भर जाती है दहशत, दिलों में सदैव के लिए।
बन जाते हैं गोलियों के, अभेद्य सुराख मानव के दिल में।।
बचे रहते हैं, अधमरे से लोग दहशत की अंधेरी गुफा में, उजाले के इंतजार में।।
युद्ध में–भर जाते हैं नदी–नाले और तालाब,
अनवरत बहती आँसुओं की धार से।
जो बन जाता है, धीरे–धीरे वेदना का सागर।
समाने लगती है उसमें, बचपन की दूधिया हँसी।
यौवन की चंचलता, बुढ़ापे का आसरा।।
युद्ध में–सूखकर झड़ जाती हैं, पंखुड़ियाँ,
ढह जाती हैं दीवारें, लहू के कतरे से उकेरा जाता है,
वर्तमान की दीवार पर भविष्य का इतिहास।।
युद्ध में– रहता है आतंक, उन्माद और वहशीपन।
शरणार्थियों का शिविर, लाशों का ढ़ेर!!

पत्थरों और औजारों से कुचली कराहती मानवता,
पूछती है सवाल युद्ध क्यों? युद्ध किसके लिए??
युद्ध में बीतता है, एक–एक पल अंतहीन बेचैनी भरा,
समाप्ति के इंतजार में, एक युग की तरह ।।
युद्ध में–छटपटाती हैं मछलियाँ नदी के बाहर..
बदरंग तितलियाँ पता पूछती हैं फूलों का।।
पशुता अचंभित है, आदमी की फितरत को देख,
नफरत करती है, अट्टहास।।

शांति में

शांति में होती खुशियां अपार, समृद्धि और विकास,
मिल जुलकर होते सभी काज, नित नवीन कार्यों का होता आगाज।
फलती–फूलती मानवता, संस्कृति का होता, प्रचार–प्रसार।
सत्कार्यों से बढ़ती सद्भावना।
मिलती प्रसन्नता, बढ़ता अपनापन, पनपती विश्वबंधुत्व की भावना ।
"प्रेम को" अब भी है उम्मीद कि युद्ध में हारते रहने,
बर्बाद होने के बावजूद, जीत उसकी ही होगी,
एक न एक दिन।।

पेटदर्द दूर करने के लिए नींबू के रस में सेंधा नमक डालकर पिएं

नैचरल मिनरल्स से भरपूर सेंधा नमक, नमक का सबसे शुद्ध रूप है और यह सफेदनमक से कई गुना बेहतर होता है और यह पाचन को बेहतर बनाने में मदद करता है।ऐसे में सेंधा नमक को नींबू के रस के साथ मिलाकर पीने से गैस की समस्यादूर होती है, डकार आते हैं और गैस पास करने में मदद मिलती है। साथ ही अगरब्लोटिंग यानी पेट फूलने की समस्या हो तो वो भी इस नुस्खे से दूर हो जातीहै।

सावधानी बरतें– हार्ट और ब्लड प्रेशर के मरीजों को इस नुस्खेको अपनाने से परहेज करना चाहिए क्योंकि ऐसे मरीजों को नमक कम खाने की सलाहदी जाती है।

भूपेन्द्र प्रताप सिंह
बीईएल–पंचकूला

राजभाषा–विविध आयाम

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के बहुभाषी देश होने के कारण सबसे पहला प्रश्न राजभाषा के संबंध में उठा। सन् 1946 में संविधान सभा का गठन हुआ। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष चुने गए। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में निर्णय लिया गया कि संविधान सभा के कामकाज की भाषा हिंदुस्तानी या अंग्रेज़ी होगी। उस समय एक वर्ग हिंदी समर्थक था तथा दूसरा वर्ग हिंदुस्तानी समर्थक था,लेकिन 14 जुलाई,1947 को संशोधन स्वीकृत कर हिंदुस्तानी के स्थान पर हिंदी शब्द स्वीकार कर लिया गया। फरवरी,1948 में संविधान का जो प्रारूप प्रस्तुत किया गया,उसमें राजभाषा का कोई प्रावधान नहीं था। केवल इतना उल्लेख था कि संसद की राजभाषा हिंदी या अंग्रेजी होगी। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक अखिल भारतीय भाषा की आवश्यकता पर ज़ोर दिया तथा उन्होंने स्पष्ट किया कि स्वतंत्र देश को अपनी ही भाषा में राजकाज चलाना चाहिए। राजभाषा के संबंध में मुख्य बहस अगस्त,1949 में हुई। इस बहस का मुख्य मुद्दा यह था कि हिंदी का स्वरूप क्या होना चाहिए ? संविधान लागू होने के बाद कितने वर्षों तक अंग्रेजी चलती रहे?तथा अंतर्राष्ट्रीय या भारतीय अंकों में से किसे मान्यता प्रदान की जाए। अंग्रेजी भाषा का प्रयोग चलते रहने के लिए दस वर्ष की समयावधि पर्याप्त मानी गई। दूसरा पक्ष इस अवधि को 15 वर्ष तक बढ़ाना चाहता था। अंततः 1 अगस्त, 1949 को डॉ.अंबेडकर ने अपना फार्मूला प्रस्तुत किया, जिसमें 15 वर्ष तक अंग्रेजी का प्रयोग बनाए रखने तथा अंतर्राष्ट्रीय अंकों की व्यवस्था रखी गई। उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी चलती रहे। प्रादेशिक भाषाओं की अनुसूची तैयार की जाए, जिसे आगे चलकर 'आठवीं अनुसूची' की संज्ञा दी गई तथा भाषा आयोग के गठन की व्यवस्था रखी गई थी।

अंतर्राष्ट्रीय अंकों को स्वीकार करने के बाद काफी बहस हुई। कई बार मतदान हुआ, लेकिन कोई फैसला नहीं हो सका। इस संबंध में अगस्त–सितंबर 1949 में कई बैठकें हुईं। मौलाना आज़ाद, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, इत्यादि राष्ट्रीय नेताओं ने सभा सदस्यों को समझा–बुझाकर इस दिशा में एकमत होने का अनुरोध किया।

एक स्वतंत्र मुल्क के तौर पर भारत ने सरकारी कामकाज हेतु हिंदी को राजभाषा बनाने का निश्चय किया। इसके लिए बाकायदा संवैधानिक प्रावधान तैयार किए गए। दिसंबर, 1967 में संसद के दोनों सदन में एक संकल्प पारित हुआ। संकल्प में अपेक्षा की गई कि हिंदी के प्रचार–प्रसार की गति बढ़ाई जाएगी। साथ ही विभिन्न राजकीय प्रयोजनों में हिंदी के इस्तेमाल हेतु भारत सरकार की जिम्मदारी तय की गई। संकल्प के जरिए सरकार से कहा गया कि वह एक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार करे ताकि राजभाषा कार्यक्रम को व्यवहार में लाया जा सके। सदन का मत था कि हिंदी के इस्तेमाल से प्रशासन और जनता के बीच दूरी कम होगी। साथ ही संवादहीनता समाप्त होने से काम का निपटान सहज रूप से होगा।

जिस तरह संविधान के अन्य उपबंधो का पालन करना हमारा कर्तव्य है, उसी प्रकार राजभाषा संबंधी उपबंधों को ध्यान में रखना तथा उसके अनुसार कार्य करना भी हमारा कर्तव्य है। सरकारी कर्मचारियों में क्षमता की कमी नहीं है। जिस प्रकार वे सरकार की अन्य विषयक नीतियों को कार्यान्वित करने में अपनी क्षमता का परिचय देते है,उसी प्रकार वे राजभाषा–नीति को बनाने और लागू करने में अपनी क्षमता का इस्तेमाल कर सकते हैं।

जैसा कि हम जानते है कि राजभाषा, "हिंदी" के प्रयोग के संबंध में सरकार की नीति है कि इसे प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भाव से लागू किया जाना चाहिए। लेकिन ध्यान रहे कि संवैधानिक उपबंधों, अधिनियम, नियमों एवं राजभाषा संबंधी आदेशों का दृढ़ता से पालन किया जाना चाहिए। यह बात सही है कि राजभाषा संबंधी नीति–नियमों की सबको सटीक जानकारी नहीं है। लेकिन आज इंटरनेट के दौर में बड़ी आसानी से इस संबंध में जानकारी हासिल की जा सकती है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर समय–समय पर जारी दिशानिर्देशों के साथ–साथ पहले जारी आदेशों का भी संकलन उपलब्ध है।

जैसा कि हम जानते हैं कि संसार के स्वाधीन देश अपना आंतरिक कामकाज अपने देश की भाषाओं में करते हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की भी आकांक्षा थी कि आज़ाद भारत में कामकाज भारतीय भाषाओं में हो। स्वतंत्रता पश्चात जब संविधान बना तो उसमें प्रावधान किया गया कि राज्यों का कामकाज उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में होगा (अनुच्छेद 345) तथा केन्द्रीय सरकार की राजभाषा एवं अंतर्राज्यीय पत्राचार की भाषा हिंदी होगी (अनुच्छेद 343 तथा 346)। हालांकि संविधान के अनुच्छेद 345 के अनुसार कई राज्यों की भी राजभाषा उनके विधानमंडल द्वारा बनाए गए अधिनियमों के अनुसार, हिंदी है। ऐसे राज्यों में विभिन्न स्तर पर कामकाज हिंदी में हो रहा है। इसके इतर केन्द्र सरकार के कार्यालयों में भी हिंदी भाषा के इस्तेमाल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

जैसा कि दिसंबर 1967 में संसद में पारित एवं जनवरी 1968 के गजट में अधिसूचित भाषा संबंधी संकल्प में यह स्पष्ट है कि"संसद, सरकार से यह अपेक्षा रखती है कि संविधान के उपबंधों के अनुसार केन्द्रीय सरकार का अधिकाधिक काम हिंदी में हो।"

संकल्प के पैरा–1 के अनुसार हिंदी के प्रयोग के संबंध में जो वार्षिक कार्यक्रम बनाया जाता है उसमें विभिन्न मदों के बारे में निश्चित लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं और विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों आदि को उन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भरपूर प्रयास करने को कहा जाता है। जुलाई 1976 में अधिसूचित राजभाषा नियम भी पत्राचार आदि में हिंदी के प्रयोग के संबंध में स्पष्ट हैं। इसका फायदा यह हुआ है कि आज की तारीख में शायद ही ऐसा कोई सरकारी कार्यालय होगा जिसके कर्मचारियों को सरकार की राजभाषा नीति के संबंध में थोड़ी बहुत जानकारी न हो। संसदीय राजभाषा समितियों के दौरों के फलस्वरूप जागरूकता काफी बढ़ी है। इन दौरों से उच्च स्तर के अधिकारी विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं और वे राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में पहले की अपेक्षा अधिक गंभीरता से ध्यान देने लगे हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि राजभाषा नीति के कार्यन्वयन के संबंध में अब तक जो प्रयास हुए हैं वे निष्फल नहीं रहे। उनका सुपरिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। अंत में यही कहा जा सकता है कि यदि सरकार की राजभाषा नीति की जानकारी संबंधित अधिकारियों को अच्छी प्रकार से हो तो वे इसके विषय में अपने सहयोगियों को सही दिशा दे सकेंगे और मूल रूप से हिंदी में काम करने की प्रवृत्ति अधिकतम लोगों में उत्पन्न कर पाएंगे जिससे हिंदी के प्रयोग की मात्रा कई गुणा आसानी से बढ़ जाएगी।

ऋतु लाम्बा
बीईएल कार्पोरेट कार्यालय

रूस–यूक्रेन युद्ध–भारतीय अर्थव्यवस्था

वर्तमान में जारी रूस–यूक्रेन युद्ध की विभीषिका से हम सभी आए दिन अवगत हो रहे हैं। जन–धन, संसाधनों, सुविधाओं की हानि इतनी प्रचंड है कि दिल कांप उठता है। इसके दुष्प्रभावों में एक जिसका दूरगामी परिणाम रहेगा वह है दोनों देशों और सभी संबद्ध देशों की अर्थव्यवस्था। यह युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से देखा गया सबसे बड़ी पारंपरिक सैन्य कार्रवाई थी जो यूं ही चलती रही तो वैश्विक आर्थिक तबाही का कारण बन सकती है।

रूस–यूक्रेन संकट ने वैश्विक व्यापार में जबरदस्त अस्थिरता और अनिश्चितता पैदा कर दी है और तेल और अन्य वस्तुओं की कीमतों में ज़बरदस्त उछाल देखने को मिल रहा है। यह वैश्विक आर्थिक विकास के लिए एक बड़ा झटका है क्योंकि रूस वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक है। हालाँकि, भारत के व्यापार में रूस से केवल 1% तेल आयात शामिल है, लेकिन उच्च मुद्रास्फीति और सुस्त विकास इससे जुड़े दुष्प्रभाव हैं।

भारत अपने 85% कच्चे तेल की जरूरतों को पूरा करने के लिए आयात पर निर्भर है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतों में 14 साल के उच्च स्तर पर उछाल के परिणामस्वरूप अब व्यापक मूल्य दबाव होगा। भारत का रूस के साथ महत्वपूर्ण व्यापारिक व्यापार नहीं हो सकता है, फिर भी, पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण आपूर्ति में व्यवधान के कारण इसे आर्थिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। निर्यात के लगातार घटने और आयात के बढ़ने से भारत का रूस के साथ व्यापार घाटे का होता है।

विद्युत मशीनरी और उपकरण रूस को हमारा प्रमुख निर्यात है। व्यापार चौनल के माध्यम से प्रभाव सीमित होगा और उच्च वस्तुओं की कीमतों के माध्यम से अर्थव्यवस्था हमारी मुद्रास्फीति और चालू खाता घाटा (सीएडी) को प्रभावित करेगी। भारत के सीमित प्रत्यक्ष जोखिम के बावजूद, आपूर्ति में व्यवधान और व्यापार की अस्थिरता की मौजूदा शर्तों के संयोजन से विकास पर असर पड़ेगा, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति में तेज वृद्धि होगी और इसके कारण चालू खाते व्यापक घाटा होगा।

भारत की रक्षा आपूर्ति

यह माना जाता है कि यूक्रेन के आक्रमण के बाद से भारत से संयुक्त राष्ट्र में एक वोट से कई बार

परहेज देश की रक्षा उपकरणों की आपूर्ति को सुरक्षित करने की आवश्यकता से प्रेरित था, जिनमें से अधिकांश रूस से आता है। भारतीय सेना रूसी आपूर्ति वाले उपकरणों के बिना प्रभावी ढंग से काम नहीं कर सकती है। भारतीय सेना का मुख्य युद्धक टैंक बल मुख्य रूप से रूसी T-72M1 और T-90S से बना है।

यदि रूस और यूक्रेन जल्द ही युद्ध विराम नहीं करते हैं तो संघर्ष का क्षेत्र विस्तारित होगा जो अनेक देशों तक फैल सकता है जो सभी संबंधित व्यवसायों के लिए बुरी खबर होगी। लेकिन चाहे संघर्ष लंबा हो या जल्दी समाप्त हो जाए, इससे मुद्रास्फीति बढ़ सकती है जो कई क्षेत्रों को प्रभावित करेगी।

वैश्विक शांति की दृष्टि

यूक्रेनी लोग वास्तव में नर्क का जीवन भोग रहे हैं और दुनिया भर में भोजन, ऊर्जा और उर्वरक की आसमान छूती कीमतों के साथ वैश्विक खाद्यान्न की कमी महसूस की जा रही है।

शांति और विकास के लिए चल रही चुनौतियों के लिए अभिनव समाधान पैदा करने की दिशा में वैश्विक शांति की दृष्टि सरकारों, बहु–पक्षीय एजेंसियों, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज के बीच सामाजिक समझौता बनाने वाले सहयोगात्मक प्रयासों के लिए उत्प्रेरक बनना है। दुनिया भर में युवा लोगों और प्रमुख हितधारकों के माध्यम से काम करते हुए, वैश्विक शांति के विचारों, नवप्रवर्तनकर्ताओं, पीड़ितों, निवेशकों और कार्यान्वयनकर्ताओं के लिए संघर्ष की रोकथाम को बढ़ाने और वैश्विक बहु–पक्षीय प्रणाली को मजबूत करने के लिए वैश्विक चुनौतियों का व्यावहारिक समाधान खोजने के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है।

युद्ध एक त्रासदी है, एक अपराध है, और एक हार है। युद्ध पर विजय पाने का एकमात्र उपाय शांति है। हम धर्म, लिंग, वर्ण, विचार और हमारे देशों के बीच की सीमाओं से विभाजित हो सकते हैं लेकिन हम सभी मानव जाति के हैं। एक–दूसरे के साथ दया, स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए और एक–दूसरे की मदद करनी चाहिए। वैचारिक मतभेद तो निश्चित रूप से होंगे, जिन्हें शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाया जाना चाहिए।

दो विश्व युद्धों पर एक नज़र डालें तो ज्ञात होगा कि युद्ध बड़ी पीड़ा का कारण बनते हैं और वास्तव में, प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने का एकमात्र कारण यह था कि इसमें शामिल अधिकांश देश थक गए थे और तंग आ चुके थे, और अपने नेताओं से युद्धविराम करने की गुहार करते थे। युद्ध अंतहीन होते अगर यह मानवता की अपनी सीमा के लिए नहीं होते।

हमें इस बारे में सोचना चाहिए कि अगर हमारे पास असीमित संसाधन होते, तो क्या युद्ध कभी खत्म होते? हम लड़कर कभी शांति नहीं पाएंगे। वास्तव में, ऐसा लगता है कि शांति आखिरी चीज है जिसे हम हासिल करना चाहते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, संयुक्त राष्ट्र नामक संगठन की स्थापना की गई थी। हमें संघर्ष को रोकने के लिए काम करना चाहिए; संघर्ष में पक्षों को शांत करने और स्थान को धारण करने और फलने–फूलने वाली परिस्थितियों का निर्माण करने में मदद करनी चाहिए।

कविता पटेल
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

युद्ध से क्या हासिल?

प्रकृति की सभी कृतियों में मानव अद्वितीय है। चिंतन–मनन करने और निर्णय लेने के सामर्थ्य ने मनुष्य को अन्य जंतुओं से श्रेष्ठ बनाया है। किन्तु भावनात्मक बुद्धिमत्ता के वशीभूत, वर्चस्व की लालसा ने उसकी बुद्धि को भ्रमित कर दिया। शनैः शनैः अपने इलाके को, अपने देश के क्षेत्रफल को और अपना प्रभुत्व बढ़ाने और बढाते रहने की लिप्सा ने संघर्ष को जन्म दिया जिसे हम युद्ध कहते हैं।

हम सभी जानते हैं कि प्रकृति के सारे संसाधन हमारे लिए पर्याप्त हैं, बशर्ते हम उनका सही ढंग से उपयोग करें, समनुदोहन करें न कि दुरुपयोग करें। वर्तमान में मानव, प्रगति के नाम पर प्रकृति का बहुत नुकसान कर चुका है। वह भूल गया है कि यह प्रकृति सिर्फ उसकी नहीं बल्कि सभी प्राणियों और जीव जंतुओं की भी है। मानव सौहार्द्र से रहना तो दूर, पूरी दुनिया पर अपना स्वामित्व स्थापित करने को आमादा है। इसके लिए चाहे दूसरों की आहूति भी देनी पड़े तो उसे इसकी कोई परवाह नहीं। मतभेद से शुरु होकर बात विवाद तक पहुंच जाती है और आखिरकार युद्ध की नौबत आ जाती है। इस युद्ध से होने वाली तबाही परिवारों को उजाड़ देती है। अनगिनत जिंदगियां बर्बाद हो जाती हैं। देश की अर्थ व्यवस्था के साथ–साथ सामाजिक व्यवस्था भी चरमरा जाती है। कला, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक हर तरह का विकास धराशायी हो जाता है। युद्ध में शामिल दोनों पक्षों का जान–माल का नुकसान तो होता ही है साथ ही इससे उबरने में कई दशक लग जाते हैं। आज जब ऐसी स्थिति है कि विश्व में इतने सारे लोग गरीबी में जीवन यापन कर रहें हैं, कई लोग दो वक्त की रोटी भी नहीं जुटा पाते हैं, ऐसे समय युद्ध के लिए धन, संपत्ति और संसाधन बर्बाद करना कहां तक उचित है, यह तो मानवता के विरुद्ध है। हमें इस पर विचार करने की सख्त आवश्यकता है।

आरंभ से ही अगर हम देखें तो पाएंगे कि सभी देशों के बजट में सबसे ज़्यादा पैसा रक्षा बजट पर ही खर्च किया जाता है। यदि यही पैसा देश के विकास और मूलभूत आवश्यकताओं के लिए खर्च किया जाए तो हम सच्चे अर्थों में विकास कर सकते हैं। इसके स्थान पर हम आज अस्त्र–शस्त्र बनाने की नई–नई परिष्कृत तकनीकें खोज रहें हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध में शक्ति प्रदर्शन की होड़ में अमेरिका ने जापान (हिरोशिमा–नागासाकी) पर जो परमाणु बम गिराए थे उसकी विभीषिका ने कई दशकों तक इन शहरों को रेडियो–एक्टिव रखा। इनसे भी कहीं अधिक आज कल कई तरह के केमिकल, बायोलोजिकल, रेडियोलोजिकाल, न्यूक्लियर सामूहिक विनाश के हथियार बन रहे हैं। ड्रोन, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, फास्फोरस बम, किंजल मिसाइल, क्लस्टर बम, जेवलीन मिसाइल और कई अन्य इस विनाशकारक तकनीक के उदाहरण हैं। परंतु हमें समझना होगा कि एक सीमा के बाद इस विनाश को पूर्ववत नहीं किया जा सकता। संभलने की घड़ी अभी है। हमें आज ही इसके निवारण और रोकथाम के कदम उठाने होंगे, वरना मनुष्य की करनी का फल निर्दोष पेड़–पौधों और जीव जंतुओं को चुकाना पड़ेगा। यह सृष्टि विनाश की कगार पर पहुँच चुकी है। हम भी कुछ समय में विलुप्त हो जाएंगे।

ऐसा नहीं कि युद्ध रोकने के प्रयास नहीं किए गए। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद लीग ऑफ नेशन की स्थापना भविष्य में होने वाले युद्धों को रोकने के लिए ही की गयी थी किन्तु फिर भी द्वितीय विश्व युद्ध हुआ। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की गयी। पंचशील के सिद्धांतों की स्थापने की गई। परंतु उसके बाद भी कई बड़े छोटे युद्ध होते रहें है जैसे

भारत–पाकिस्तान, भारत–चीन, अर्मेनिया – अज़र बैजान, इज़राइल – वियतनाम, इज़राइल – फिलिस्तीन और कई अन्य। एक आंकड़े के अनुसार हमारे 5560 वर्षों के लिखित इतिहास में विश्व में लगभग 14,531 युद्ध हुए हैं। कितना विनाश और कितने जान–माल का नुकसान हुआ। आज स्थिति यह है कि परमाणु बम होना एक देश के लिए सम्मानसूचक माना जाता है। इनकी संख्या शक्ति प्रदर्शन का द्योतक है। अपनी स्वतंत्रता और सम्मान की रक्षा के लिए हमें इन्हें रखना होगा अन्यथा अन्य देश हमें कमजोर समझ कर हम पर हमला कर देंगे। इसमें सबसे ज़रूरी यह है कि शक्तिशाली देश ही शांति की बात सशक्त ढंग से कर सकते हैं।

वास्तव में शांति से रहना ही हम सभी की मूलभूत आवश्यकता है किन्तु स्वार्थवश आज राजनीति और कूटनीति ही सब ओर व्याप्त है। प्रकृति के सृजन के Survival of the fittest के सिद्धान्त को हम सभी ने जिस तरह से समझा है उसे बदलना होगा। प्रकृति के साथ चलकर, पिछले नुकसान की भरपाई कर ही हम सही रास्ते पर आ सकते हैं। और तभी हम मानवता के स्वर्णिम भविष्य की कल्पना कर सकते हैं।

लेखांजिनी मनीष
सुपुत्री– मनीष कुमार टी, कार्पोरेट कार्यालय

युद्ध है तो शांति नहीं

युद्ध किसके लिए किया जाता है?
युद्ध दो राष्ट्रों को ताकत, गर्व मिलने के लिए किया जाता है।
पर कभी सोचा है शांति मिलने के लिए युद्ध किया जाता है?
युद्ध में बहुत सारे जवान अपना जीवन रणभूमि में खोते हैं।
बहुत सारी महिलाएं विधवा हो जाती हैं।
बहुत सारे बच्चे अनाथ हो जाते हैं।
अपने मित्रों, भाइओं, बेटों को खो देते हैं।
पर अंत में 'ताकत' या गर्व नहीं बचता पर हर
देशवासियों का दु:ख बचता है।
इस भूमि में शांति से बढ़कर और कुछ नहीं।
'युद्ध है तो शांति नहीं'

नीरज कुमार चड्ढा
बीईएल कार्पोरेट कार्यालय

कहानी...

वीरगति

आज सुबह ही बृजेश का का फोन आया। कॉलेज का मेरा एकमात्र मित्र जो अब भी, दो दशक बाद भी संपर्क बनाए हुए था। बाकी सब मित्र और सहपाठी तो कैरियर की उड़ान में इतना ऊँचा पहुँच चुके थे कि शायद ही उस ऊँचाई से कुछ और देख पाए। पर ब्रजेश अवश्य हाल–चाल पूछता था। दिवस–त्यौहार पर शुभकामनाएं भेजना भूलता नहीं था। सुबह–सुबह ब्रजेश का फोन। आवाज़ रुआंसी थी। दुखी स्वर में बोला, "लक्ष्मी ताई याद है तुझे भाई!" "हां हां याद है। याद क्यों नहीं होगी!" उद्विग्न होकर मैंने उत्तर दिया, "क्या हुआ उन्हें? सब ठीक तो है।" "लक्ष्मी ताई नहीं रही, वीरू भी मारा गया" यह कहते हुए बृजेश रो दिया। "कैसे हुए यह सब? अचानक से?" बृजेश सब कहते चला गया और मैं जड़वत सुनता रहा। कब मेरी आंखे नम हो गई थीं, पता ही नहीं चला। मैंने ब्रजेश का ढांढस बंधाया, सांत्वना दी और फोन रख दिया। पर शायद हाथ–पांव सुन्न हो चुके थे, कुछ करने की हिम्मत नहीं बची थी। वहीं कुर्सी पर बैठ गया और पिछले सब दृश्य आंखों के सामन तैरने लगे।

डेढ़ या शायद पौने दो साल ही हुए थे। काम के सिलसिले में डोडा जाना हुआ। बृजेश को जैसे ही मालूम हुआ उसने सख्त ताकीद कर दी कि अगर उसे मिले बिना मैं लौट गया तो वो दोबारा बात नहीं करेगा। डोडा शहर से कुछ दूर ही था उसका गाँव। बृजेश अपने मोटर साइकल पर ही लेने आ गया था। 'ना' कहने की तो शायद कोई गुंजाइश ही नहीं थी। छोटा सा गाँव था पर था सुंदर। शांति तो थी पर आतंक के साये के नीचे पलने वाली शांति भी सताती रहती है। मेरे मन में भी संशय और भय के मिश्रित भाव थे पर बृजेश के स्नेह और आग्रह के सामने उन्हें घुटने टेकने पड़े। उसका कुछ दिन उसके साथ ही रुकने का आग्रह था तो मैंने भी मन को समझाया और रुक गया।

बड़ी आवभगत की बृजेश ने। अत्युत्तम भोजन का प्रबंध किया। पहाड़ी काली माश के साथ चावल और ऊपर से देशी घी। परमानंद की अनुभूति हुई थी मानो। आस पास के खेत, शुद्धवायु, प्रदूषण का नामो निशान तक नहीं। सचमुच मजा आ गया।

और फिर एक दिन बृजेश लक्ष्मी ताई से मिलाने ले गया। गजब जीवट वाली स्त्री। सफेद बाल और झुर्रियाँ वृद्धावस्था की गवाही दे रहे हैं। इस आयु में भी खेत का, घर का सब काम करती थी। घर में एक गाय भी पाल रखी थी। जो भी करती, जहाँ भी जाती, वीरू साथ ही होता था। साये की तरह। जैसे कोई सजग पहरेदार कुछ बोलता नहीं है, बस अपने प्राणपण से अपने स्वामी की रक्षा करता है। उसी तरह शायद ही किसी ने वीरू को भौंकते सुना होगा पर जैसे चौकन्ना होकर वीरू लक्ष्मी ताई की रक्षा के लिए सजग रहता था, शायद किसी को भी अगर यह

भ्रम हो कि वो डरपोक है, उसके भ्रम को तोड़ डालने के लिए पर्याप्त था।

बृजेश की रिश्तेदारी में ही थी लक्ष्मी ताई। बृजेश कई बार उनको अपने साथ ही रहने के लिए बोल चुका था पर स्वाभिमानी लक्ष्मी ताई कहां मानने वाली थीं। स्वाभिमान की अनमोल पूँजी ही तो थी जो इस आयु में भी उनको चलायमान रखे हुई थी।

हम दोनों बिन बुलाए मेहमान की तरह जा पहुँचे थे। लक्ष्मी ताई हम दोनों को देख आशीर्वादों की वर्षा करने से एक पल भी न चूकी। आनन फानन में घर की बनी फुलवड़ियां तल लाईं और साथ में दूध–पत्ती। बड़े चाव से जैसे कोई अपने बच्चों से बर्ताव करता है वैसी आवझगत की। रात का भोजन किए बिना जाने देने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। रोटी और साग ही तो था मात्र पर उसके साथ ममता और स्नेह का वो झरना था जो उस भोजन को छप्पन भोग से भी उत्तम बना रहा था। इस सारे समय वीरू एक सजग प्रहरी की तरह चौकन्ना बैठा हुआ था। वीरू को भी उसी स्नेह से दूध और रोटी दी गई थी। लक्ष्मी ताई के पति 1971 के युद्ध में दुश्मन से लोहा लेते हुए शहीद हो गए थे। उस समय वीर सिंह कोख में ही था। होश संभालते ही वीर सिंह बलिदानी पिता के नक्शे कदम पर चलने को उतावला हो उठा। एन डी ए और फिर सीधा आर्मी। बलिदानी पिता का पुत्र कैसे पीछे रहता। देश की रक्षा के लिए कारगिल युद्ध में अपने प्राण न्यौच्छावर कर दिए। लक्ष्मी ताई को पति और पुत्र की शहादत का कोई मलाल नहीं था, बल्कि गर्व था।

जीवन तो पानी की धारा है निरंतर बहता ही रहता है। किसी के रोके रुकता तो है नहीं। कई वर्ष निकल गए। एक दिन न जाने कहाँ से नन्हा से वीरु दुम हिलाता हुआ आंगन में प्रकट हो गया था। जिस आंगन से कभी कोई चिड़िया भी भूखी न उड़ी हो वहाँ वीरू को दूध रोटी मिलना तो निश्चित था। बस फिर क्या था, वीरु वहीं पसर गया और फिर लक्ष्मी ताई और घर दोनों की रखवाली की जिम्मेदारी संभाल ली। मनुष्यों की तरह धन संपदा की कोई चाह तो थी न उसे। भोजन और स्नेह प्रचुर मात्रा में मिलता था और वीरू बेमोल उस स्नेह के आगे बिक चुका था।

और फिर वो रात आ गई जिसके बारे में बृजेश का फोन आया था। आधी रात को आतंकी लक्ष्मी ताई के घर आ धमके थे। ए.के.–47 की नोक पर भोजन बनवाया और खा लिया। लक्ष्मी ताई का खून खौल रहा था। एक फौजी की विधवा और एक फौजी की मां इन देशद्रोहियों के सामने घुटने टेक दे, यह संभव ही नहीं था। वीरू भी किसी मंझे हुए योद्धा की तरह मौके का इंतजार कर रहा था। जल्द ही वो मौका आया। दो आतंकी थे। भोजन करके जैसे ही दोनों थोड़े निश्चिंत हुए, लक्ष्मी ताई कुल्हाड़ी लेकर टूट पड़ी और एक आतंकी को चित्त कर दिया। दूसरे आतंकी की ए.के.–47 से निकली गोलियों की बौझार लक्ष्मी ताई को छू भी न पाई। वीरू गोलियों की पूरी बौझार को झेल गया था। लक्ष्मी ताई के लिए इसना समय पर्याप्त था। दूसरा आतंकी भी ढेर हो चुका था। एक भी गोली छू भी नहीं पाई थी लक्ष्मी ताई को पर 'वीरू' के प्राण पखेरु उड़ चुके थे।

पुलिस को सूचना भिजवा दी गई थी। अगली सुबह जब तक पुलिस पहुँची, लक्ष्मी ताई भी प्राण त्याग चुकी थी। शायद लक्ष्मी ताई अपने कर्तव्य कर्म की पूर्णता दे चुकी थी या शायद वीरू की मौत का सदमा झेल न पाई थी। अपने पति और पुत्र की तरह ही एक वीरंगना की भांति शत्रु को परास्त करते हुए वह वीरगति को पा चुकी थीं। बलिदानियों की उस सूची में अपना नाम लिखवा चुकी थी जिन्हें न तो चक्र मिलते हैं और न ही प्रशस्ति पत्र। लक्ष्मीबाई की तरह ही लक्ष्मी ताई ने अपने पराक्रम का लोह मनवा दिया था।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाएँ

1			41			2		42	43			3		44		45
								4								
6	46	47		6	48					7	49					
	8				9			10	51		11		50		12	
13								14				15			16	
				17						53						
19	54											21	55			56
				22	57	58				23	59		24			
25		60			26					27		61				
	28			29					63		30				31	64
32								33		65		34		66		
35			36		67			37								
		38					39						40			

संकेत अगले पृष्ठ पर

इस वर्ग पहेली को भरकर, अपने नाम, कार्यालय के नाम और अपने मोबाइल नं. सहित cool@bel.co.in पर भेजें। सर्वाधिक सही हल भेजने वाले प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

	बाएँ से दाएँ		ऊपर से नीचे
1	चंदा, योगदान (4)	1	आखरी, पिछला (3)
2	कड़ा इम्तिहान, कठिन परीक्षा (5)	2	अवहेलना, उपेक्षा, अनादर (4)
3	एक हिंदी अखबार (5)	3	मान्यता, एक दर्जा, हीरे–जवाहरात (5)
4	हानि, नुकसान (2)	10	छिलका (2)
5	राजा, मालिक, एक उपनाम (3)	12	दस्तकार, शिल्पकार (4)
6	उलट–फेर, अव्यवस्था, गड़बड़ (4)	13	चलाना, घुमाना (3)
7	एक पर्वत (3)	18	फलीभूत (3)
8	मंजूषा, संदूक, पेटी (3)	29	कभी–कभी (4)
9	गाना, गीत (2)	32	कर्नाटक का तीर्थ स्थान, गाय का कान (3)
10	तक्र, मठा, मही (2)	33	ध्वनि, पुकार, बोली (3)
11	मार डालने वाला, नाशक (3)	36	धुन, ताल, सुर (2)
12	एक पक्षी, मेहमानों के आने का संकेत (2)	41	नाड़ी, धमनी (2)
13	गुलामी, नौकरी, सेवा (3)	42	गुट, दल (2)
14	श्रंखला, कड़ी (2)	43	रिवाज, रूढ़ि (2)
15	आद्र, भीगा, तर (2)	44	मनोवृत्ति, धारणा (3)
16	दस्तूर, प्रथा (2)	45	युक्तियुक्त, विवेकसम्मत (5)
17	चोट, प्रहार, आक्रमण (2)	46	लिखने वाला, एक पदनाम (3)
18	हरी सब्जी (2)	47	कृपाण, तलवार (3)
19	मक्खन, मसका, माखन (4)	48	निरंतर, बार–बार (4)
20	ताजगी, अच्छा लगना, स्वस्थ महसूस करना (4)	49	बादल (2)
21	अनर्थकारी, नुकसान देय (5)	50	अल्प, थोड़ा (2)
22	कीर्तिवान, प्रसिद्ध, विख्यात (4)	51	लकड़ी, चलने में सहायक (2)
23	वाणी, वचन, बोली (2)	52	जोखिमपूर्ण (5)
24	बोझ, वचन (2)	53	आडंबर, तड़क–भड़क (4)
25	रास्ता बंद करना, सरकारी शुल्क वसूली (4)	54	अनुशासनप्रिय, पक्का, सख्त अनुपालन (6)
26	हटना, खिसकना, स्थगित होना (3)	55	पूरा करना, पालन करना (3)
27	आनाकानी करना, चलता करना, टालना (4)	56	छोटीनाव (2)
28	टेक, जो खोया नहीं, स्तंभ (2)	57	घड़ा, कुंभ (3)
29	अकस्मात, अचानक, एकाएक (4)	58	घेरा, परिधि (3)
30	अंगरखा, परिधान, एक मस्जिद (2)	59	जल से उत्पन्न (3)
31	नन्हा, छोटा, अल्प (2)	60	हवा का झोंका, पवन (3)
32	आर्गेनिक खाद, ईंधन का एक स्रोत (3)	61	जयशंकर प्रसाद की एक प्रसिद्ध कृति (4)
33	जनसंख्या, बस्ती (3)	62	लाल (2)
34	एक अलंकार, अलग–अलग अर्थों/शब्दों की बारंबारता (3)	63	बदली, स्थानांतरण (4)
35	मूल, जड़, मीठा (2)	64	हस्तक्षेप, अतिक्रमण (4)
36	पक्षाघात, एक बीमारी (3)	65	निर्धन, गरीब (2)
37	बजाना, संगीत से संबंधित (3)	66	कूड़ा, रद्दी (3)
38	संपत्ति, जमीन, मिल्कियत (4)	67	आक्रमण, आघात, प्रहार (2)
39	जुकाम, सर्दी लगना (3)		
40	एक गिनती (4)		

अंकुर
(हमारे बच्चों की प्रतिभा)

अभिनव सुराना
सुपुत्र चंचल सुराना

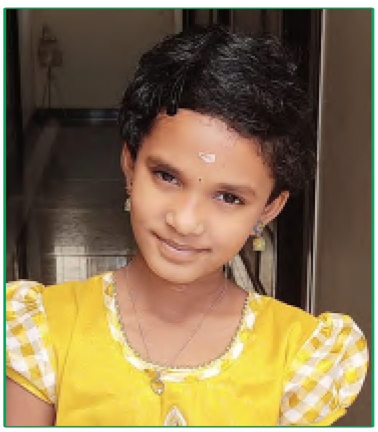

जननी मनीष
सुपुत्री मनीष कुमार टी

हेमंत आर
सुपुत्र कविता के पी

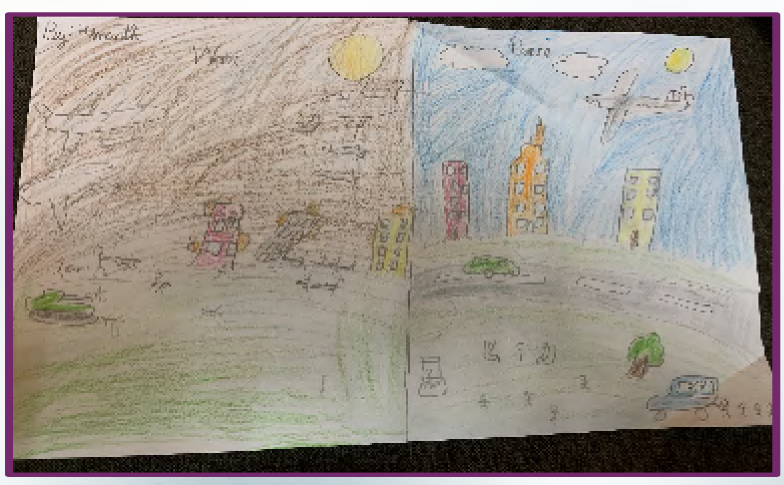

लेखांजिनी मनीष
सुपुत्री मनीष कुमार टी

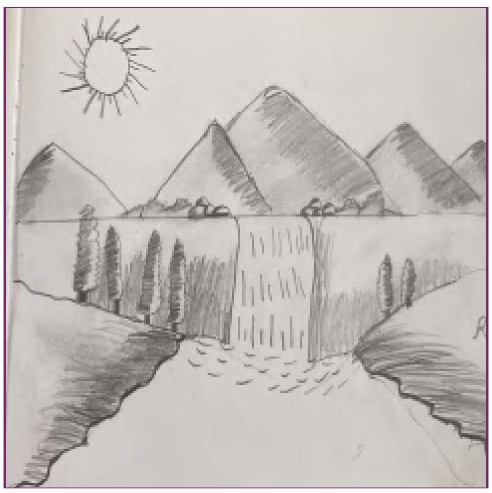

ऋत्विक सुराना
सुपुत्र चंचल सुराना

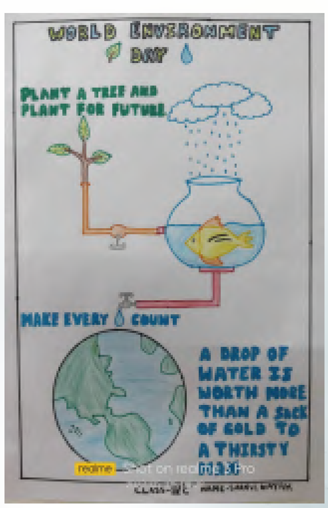

शानवी नायक
सुपुत्री जितेन्द्रिय नायक

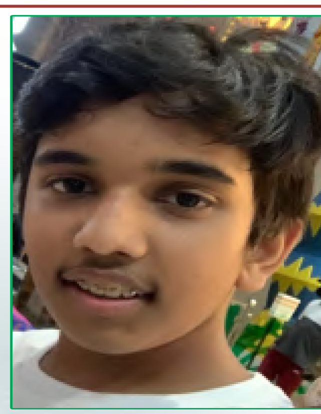

जीवन
सुपुत्र कविता के पी

"डीप फ्रीजर"

शिव कुमार
बीईएल–पंचकूला

बेटे की विदेश वापसी में केवल एक सप्ताह का समय बचा था। माता–पिता की इकलौता संतान होने के कारण बार–बार पिताजी से कह रहा था कि पिताजी, मैने दैनिक प्रयोग में होने वाली वस्तुओं जैसे राशन, सब्जी, दूध, दवाइयाँ, कपड़े, टैक्सी इत्यादि के लिए सभी संबंधित विक्रेताओं की हिदायत दे दी है तथा साथ में आपका फोन नंबर भी दे दिया है, ताकि आपकी समय पर हर वस्तु उपलब्ध होती रहे और आपको कोई परेशानी न आए।

देखते–देखते सप्ताह का अंतिम दिन आ गया। बेटा बोला, पिताजी लगभग सभी वस्तुओं का प्रबंध हो गया है, किसी और वस्तु की व्यवस्था करनी हो तो बेझिझक बता दीजिए। कुछ क्षण बाद पिताजी न जाने क्या सोचकर बोले, बेटा मुझे पता है कि विदेश से आने–जाने में कितना समय लगता है। इसलिए एक डीप फ्रीजर का प्रबंध भी जाते–जाते कर जाओ, ताकि तुम्हारे आने तक हमारी मृत देह सुरक्षित रह सके और तुम हमारे अंतिम दर्शन कर सको। बेटे को काटो तो खून नहीं, उसने हमेशा के लिए विदेश जाना रद्द करके माता–पिता के पास रहने का फैसला कर लिया।

मोनिका जंगपांगी
सीआरएल–बेंगलूर

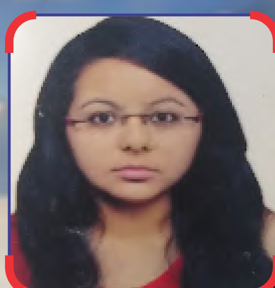

पथ

दृढ़ है विश्वास है, कि सिर कभी झुका नहीं।
झुका तो वो प्रहार है, जो खुद सम्भल सका नहीं।।
सत्य है जीत है, कि क्रोध का विनाश सही।
विनाश तो वो क्रूर है, जो सुख समझ सका नहीं।।
साहस है वीर है, कि कायर का कोई साथ नहीं।
साथ तो वो डोर है, जो जिद छुड़ा सका नहीं।।

आइए हिन्दी माध्यम से कन्नड सीखकर बात करें
ಬನ್ನಿ ಹಿಂದಿಯ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಕಲಿತು ಮಾತಾಡೋಣ

1	मैं आज सुबह ही लौटा हूँ।	ನಾನು ಇಂದು ಬೆಳಿಗ್ಗೆ ವಾಪಸ್ ಬಂದೆ.	नानु इंदु बेळिग्गे वापस बंदे।
2	क्या तुम्हारा अभी जाना जरूरी है?	ನೀನು ಈಗಲೇ ಹೋಗಬೇಕಾ?	नीनु ईगले होगबेका?
3	मुझे चलना चाहिए	ನಾನು ಹೋಗಲೆ ಬೇಕು	नानु होगले बेकु
4	कृपया कष्ट न लें।	ದಯವಿಟ್ಟು ತೊಂದರೆ ತಗೋಬೇಡಿ.	दयविट्ठु तोंदरे तगो बेडी
5	आप बुरा तो नहीं मानेंगे?	ನೀವು ಏನು ಅಂದು ಕೊಳ್ಳುವುದಿಲ್ಲ ತಾನೆ?	नीवु एनु अंदु कोळ्ळोवुदिल्ला ताने?
6	कोई बात नहीं।	ಪರವಾಗಿಲ್ಲ, ಚಿಂತಿಸಬೇಡಿ.	परविल्ला, चिंतिसबेडि
7	क्या आपकी इजाजत है?	ನಿಮ್ಮ ಅನುಮತಿ ಇದೇಯಾ?	निम्म अनुमति इदेया?
8	अवश्य / जरूर।	ಅವಶ್ಯವಾಗಿ, ಖಂಡಿತವಾಗಿ	अवश्यवागि, खंडितवागि
9	क्या इतना काफी है?	ಇಷ್ಟು ಸಾಕೆ?	इष्टु साके?
10	आपने क्यों तकलीफ की?	ನೀವು ಏಕೆ ತೊಂದರೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಿರಿ?	नीवु एके तोंदरे तेगेदु कोंडिरि?
11	एक बार फिर	ಮತ್ತೊಮ್ಮೆ	मत्तोम्मे
12	थोड़ा और	ಇನ್ನು ಸ್ವಲ್ಪ	इन्नु स्वल्पा
13	जरा सुनिए	ಇಲ್ಲಿ ಕೇಳಿ	इल्लि केळि
14	कृपया थोड़ा आराम करें।	ದಯವಿಟ್ಟು ಸ್ವಲ್ಪ ವಿಶ್ರಾಂತಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಿ.	दयविट्ठु स्वल्प विश्रांति तेगेदुकोळ्ळि
15	कृपया क्षमा करें।	ದಯವಿಟ್ಟು ಕ್ಷಮಿಸಿ	दयविट्ठु क्षमिसि
16	मैं जा सकता हूँ?	ನಾನು ಹೋಗಬಹುದೆ?	नानु होगबहुदे?
17	कोई उम्मीद है?	ಏನಾದರೂ ಆಶಯವಿದೆಯೇ?	एनादरू आशयविदेया?
18	चुप / खामोश रहिए	ಸುಮ್ಮನಿರಿ	सुम्मनिरि
19	कितना भयानक!	ಎಷ್ಟು ಭಯಂಕರ!	एष्टु भयानका!
20	क्या खूब!	ಎಷ್ಟು ಸುಂದರ	एष्टु सुंदरा
21	आश्चर्यजनक	ಆಶ್ಚರ್ಯಕರ	आश्चर्यकर
22	स्वागत है।	ಸ್ವಾಗತ	स्वागत
23	बधाई हो / बधाइयाँ	ಅಭಿನಂದನೆಗಳು	अभिनंदनेगळु
24	क्या सुंदर विचार है।	ಎಂತಹ ಒಳ್ಳೆಯ ಯೋಚನೆ/ವಿಚಾರ	एंतह ओळ्ळेय योचने / विचार।

25	हां ज़रूर।	ಧಾರಾಳವಾಗಿ	धाराळवागी।
26	कभी नहीं।	ಎಂದಿಗೂ ಇಲ್ಲ	एंदिगू इल्ला
27	फिर आगे?	ಮುಂದೇನು?	मुंदेनु?
28	क्यों नहीं?	ಏಕಿಲ್ಲ?	एकिल्ला?
29	अब हम क्या करें?	ನಾವು ಈಗ ಏನು ಮಾಡೋಣ?	नावु ईग एनु माडोणा?
30	मानो – ना – मानो	ನಂಬಿದರೆ ನಂಬಿ ಇಲ್ಲ ಬಿಡಿ	नंबिदरे नंबि इल्ला बिडि
31	असंभव	ಅಸಂಭವ	असंभव
32	बस और कुछ नहीं / बस इतना ही।	ಅಷ್ಟೆ / ಇನ್ನೇನು ಇಲ್ಲ	अष्टे / इन्नेनु इल्ला
33	रुको / रुकिए	ನಿಲ್ಲು / ನಿಲ್ಲಿ	निल्लु / निल्लि
34	इसे लीजिए	ಇದನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಿ	इदन्नु तेगेदुकोळ्ळी
35	तैयार रहो।	ತಯಾರಾಗಿರು.	तयारागिरु।
36	होशियार रहना।	ಹುಷಾರಾಗಿರು.	हुषारागिरु।
37	धीरे जाओ।	ನಿಧಾನವಾಗಿ ಹೋಗು.	निधानवागि होगु।
38	तुरंत जाओ।	ಕೂಡಲೆ ಹೋಗು.	कूडले होगु।
39	भूलना मत।	ಮರೆಯಬೇಡ.	मरेयबेड।
40	फिर कोशिश करो	ಪುನಃ / ಮತ್ತೆ ಪ್ರಯತ್ನಿಸು	पुनः / मत्ते प्रयत्निसु।
41	आगे देखो।	ಮುಂದೆ ನೋಡು.	मुंदे नोडु।
42	एक तरफ हो जाओ।	ಪಕ್ಕಕ್ಕೆ ಸರಿ / ಜಾಗ ಬಿಡಿ	पक्कक्के सरि / जाग बिडी
43	मुझे देखने दो।	ನನಗೆ ನೋಡಲು ಬಿಡಿ.	ननगे नोडलु बिडि।
44	मुद्दे पर आओ।	ಮುಖ್ಯ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಬಾ.	मुख्य विषयक्के बा।
45	कुछ भी मत बोलो।	ಏನು ಹೇಳಬೇಡ.	एनू हेळबेडा
46	दरवाजा खोलो।	ಬಾಗಿಲು ತೆಗಿ.	बागिलु तेगि।
47	खिड़की बंद करो।	ಕಿಟಕಿಯನ್ನು ಮುಚ್ಚು.	किटकियन्नु मुच्चु।
48	क्या यह सच है?	ಇದು ನಿಜನಾ?	इदु निजना?
49	आप आए क्यू नहीं?	ನೀವು ಏಕೆ ಬರಲಿಲ್ಲ?	नीवु एके बरलिल्ला?
50	अब हम क्या करें?	ಈಗ ನಾವು ಏನು ಮಾಡೋಣ?	ईग नावु एनु माडोणा?

साहित्यकार परिचय – कृष्णा सोबती

(1925–2019)

कृष्णा सोबती ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिंदी की मशहूर लेखिका थीं। वे मुख्य रूप से कहानीकार थीं। कृष्णा जी की तमाम कहानियां 'बादलों के घेरे' नामक संग्रह में संकलित हैं। वे आज भी अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं। कृष्णा सोबती ने ही हिंदी की कथा भाषा को विलक्षण ताजगी दी है ।कृष्णा सोबती ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं पर होने वाले विभिन्न तरह के अत्याचारों को उजागर किया है। उनकी विभिन्न समस्याओं के साथ–साथ उनके साथ होने वाली सामाजिक अश्लीलता का भी इन्होंने वर्णन किया है। इनकी तमाम रचनाओं में होने वाली नैतिक और सामाजिक बहसें पाठकों के दिलों पर छा जाने वाली हैं।

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती का जन्म पाकिस्तान के गुजरात प्रांत में 18 फरवरी 1925 को हुआ था। भारत और पाकिस्तान विभाजन के बाद इनका पूरा परिवार दिल्ली आकर बस गया। अपनी साहित्य सेवा की शुरुआत इन्होंने दिल्ली से ही की। कृष्णा की जी प्राथमिक शिक्षा गुजरात में हुई थी। उन्होंने माध्यमिक, उच्चमाध्यमिक की पढ़ाई लाहौर, शिमला और दिल्ली से पूरी की। लाहौर स्थित फतेहचंद कॉलेज से उच्च माध्यमिक की पढ़ाई पूरी हुई। इस कॉलेज में पढ़ाई के दौरान वे वहीं लड़कियों के हॉस्टल में रहती थीं। भारत–पाक विभाजन के वक्त वह फतेहचंद कॉलेज की छात्रा थीं। उच्च माध्यमिक के बाद की पढ़ाई उन्होंने शिमला में दिल्ली में की। विभाजन के बाद उन्हें पढ़ाई छोड़ कर नौकरी करनी पड़ी। कृष्णा सोबती के कहानी संग्रहों जैसे 'डार से बिछुड़ी', 'बादलों के घेरे', 'तीन पहाड़' व 'मित्रों मरजानी' में उन्होंने नारी को अश्लीलता की कुंठित राष्ट्र को अभिभूत कर सकने में सक्षम अपसंस्कृति को इतने बेहतर तरीके से उभारा है कि इससे साधारण पाठक हतप्रभ हो जाता है।

इनका 'सिक्का बदल गया', 'बदली बरस गई' जैसी कहानियां भी काफी प्रसिद्ध है। इनके उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' और 'मित्रों मरजानी' को नामवर सिंह ने उल्लेखीय माना है। नामवर सिंह ने सोबती को उन उपन्यासकारों की पंक्ति में गिनाया, जिनकी रचनाओं में कहीं वैयक्तिक और कहीं सामाजिक–पारिवारिक विषमताओं का विरोध मिलता है।हालांकि कुछ समीक्षक ऐसे भी हैं जिन्होंने इनके 'जिंदगीनामा' की खूब प्रशंसा भी की है। डॉ देवराज उपाध्याय ने कहा था कि किसी व्यक्ति को अगर पंजाब प्रदेश की संस्कृति हो या रहन–सहन, रीति–रिवाज आदि की जानकारी प्राप्त करनी हो या फिर वहां के इतिहास की जानकारी लेनी हो, वहां की दंत कथाओं, प्रचलित लोकोक्तियों के अलावा 18वीं व 19वीं शताब्दी की प्रवृतियों से अवगत होना हो तो जिंदगीनामा' से अलग जाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

कृष्णा सोबती की लंबी कहानी 'मित्रों मरजानी' का प्रकाशन होते ही उन पर हिंदी कथा–साहित्य के पाठक फिदा हो गए थे। इसका कारण था कि कृष्णा जी की महिलाएं ऐसी थीं जो कस्बों और शहरों में दिख तो रही थी लेकिन उनका नाम लेने से लोग डरते थे। सोबती जी का कथा साहित्य उन्हें इस भय से मुक्त कर रहा था।

सच्चाई भी यही है कि कथाकार अपने विषय और उससे बर्ताव में न सिर्फ अपने आप को मुक्त करता है, बल्कि वह पाठकों की मुक्ति का भी कारण बनता है। कभी हिंदी विभाग में पढ़ाई नहीं करने वाले पाठक भी उन्हें पढ़कर अपने आस–पास हो रहे बदलावों को समझना चाहते थे। मन में बस रही एक समानांतर दुनिया से मुक्ति के लिए कृष्णा जी की कहानियां मन में बैठ जाती थीं। कृष्णा सोबती जी का निधन 25 जनवरी 2019 को हुआ था।

बी ई एल कथन गीत

देश की रक्षा अपना फर्ज़ है, भारत की है शान
बी ई एल ! बी ई एल !
भूमि जल हो या हो आसमान,
वीर जवानों के साथ खड़े हरदम,
अंधेरे में भी हम राह को रोशन करें
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !
दशा दिशा का पता बताएं शान से खड़ी रेडारें,
कंधों पर सजते हैं संचार यंत्र हमारे,
जहाज़ हो या अंतरिक्ष यान उनमें तंत्र हमारे,
शिक्षण हो या प्रसारण साथ हैं यंत्र हमारे,
जन जन का सहयोग करें हम,
मतदान को आसान करें हम,
नावू बी ई एल ! मेमू बी ई एल !
आपण बी ई एल ! नांगल बी ई एल !
आमरा बी ई एल ! हम हैं बी ई एल !
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !

75

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालय–आउटर रिंग रोड, नागवारा,
बेंगलुरु– 560045

टोल फ्री नंबर 1800 4250433
सी आई एन नंबर L32309KA1954G01000787
www.bel-india.in